श्री गणेशाय नमः

धर्मरक्षा पंचांग (२०२१-२२)

श्री विक्रम संवत्- २०७८, शक संवत्- १९४३

नत्वा शारदां देवीं शुद्धां गणितं करोम्यहम्| सनातनधर्मरक्षाय धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्||

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये| स्वानुभूत्येकसाराय नमः शिवाय तेजसे||

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत| अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्||

ज्योतिषाचार्य/हस्तरेखाविद्-

(१) पं. श्री संतोष तिवारी (ज्योतिष, वास्तु, कर्मकाण्ड) +916299953415,

(२) पं. रंजन तिवारी +919523772973

(३) पं. संजन तिवारी (सञ्जनाचार्य्य जी) +919852837558

विनम्र निवेदन

हरि: ॐ; मैं शारदा देवी को नमन करके सनातन धर्म की रक्षा के लिए शुद्ध ग्रह-गणित वाले धर्मरक्षापंचाग का प्रारम्भ कर रहा हूँ| संवत् २०७८ का धर्मरक्षापंचाग आपके कर कमलो में समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है| इस पंचाग में तिथि, नक्षत्र आदि मिनटात्मक और करण दण्डात्मक में दिया गया है| इसमें व्रत-त्योहारादि के साथ कुछ विशेष जानकारी भी है, फिर भी मानवीय त्रुटि संभवित रहती है अतः सुधीजन पाठकों से निवेदन है कि इस प्रयास को और बेहतर बनाने के लिए आपका अमुल्य सुझाव अपेक्षित है| अपना सुझाव दें- Ranjanmuraudpur01@gmail.com

पञ्चाङ्गेऽस्मिन् अक्षांश:- २५|४६, रेखांश:- ८४|५४, पलभा:- ५|४७|३०

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्रादिहीनन्तु भवेत्|

तत्सर्वं क्षम्यतां प्रभो प्रसीद परमेश्वर||

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते|

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते||

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः|

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिददुःखभाग्भवेत्||

||ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः||

अद्भुत काम्य प्रयोग

1-रोग, व्याधि, दुर्घटना, भय, दु:स्वप्न, दुष्कृत्य आदि के नाश हेतु महामृत्युंजय जप, शतचण्डी पाठ, गजेन्द्रमोक्ष पाठ, रामरक्षा पाठ, सुन्दरकाण्ड आदि का पाठ कराना चाहिए| जप संख्या-१०००००, पाठ- १००| **2**- पुत्रप्राप्ति प्रयोग- संतान गोपाल प्रयोग पुत्रप्राप्ति हेतु उत्तम अनुष्ठान है इसके अलावा पुत्रेष्टि यज्ञ, रुद्रानुष्ठान, शिवस्तोत्रपाठ, शतचण्डी पाठ आदि भी श्रेष्ठकर है **3**-पुत्रप्राप्ति हेतु आम्रयक्षिणी मंत्र प्रयोग सपादलक्ष उत्तम है| **4**-पति/पत्नी प्राप्ति(विवाह) हेतु- कात्यायनी मंत्र से सम्पुट शतचण्डी पाठ करावे|

5- परीक्षा में सफलता हेतु- ग्रहण काल में ब्राहमण द्वारा नील शारदास्तोत्र का १०८ पाठ अथवा, वाग्देवीमंत्र प्रयोग १००८ उत्तम है|

6-लक्ष्मी प्राप्ति(धनवृद्धि) हेतु- ब्राहमण द्वारा श्रीसूक्त का १००८ पाठ रात्रि में कार्तिककृष्ण ३० को प्रतिवर्ष करें|

7-बाल रक्षा प्रयोग- नजर आदि से रक्षा के लिए भस्म को ब्राहमण से महामृत्युंजय मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कराकर बालक के दाहिनी भुजा पर बाधे|

8-नाकारत्मक उर्जा,शत्रु, प्रेतादि दोष, क्रुरग्रह निवारण हेतु बगलामुखी प्रयोग उत्तम है|

9- कालसर्प दोष निवारण- श्रावण मास में नागपञ्चमी को भगवान रुद्र का अभिषेक करें और चाँदी के नाग नागिन का पूजन कर कोयले और काले पताके के साथ बहते जल में प्रवाहित करें | यह नागपंचमी के अलावा श्रावण माह के किसी भी बुधवार को कर सकते हैं|

नोट:-1.अनुष्ठान में मधु, खारी नमक, लहसुन, गाजर, तेल, बासी अन्न, कोदो, चना, मसुर, अरहर, उड़द, रुखा अन्न तथा जिसमें कीड़े परे हो उसे नहीं खाना चाहिए|

2. कांसे के पात्र में भोजन नहीं करना चाहिए|

3.जप अथवा पाठ ब्राहमण द्वारा कराने से दस गुणा फलकारक होता है|

4. जिस यज्ञ में ब्राहमण एवं संतों का आगमन हो वह यज्ञ स्थल पवित्र हो जाता है|

5.भोजन तीनों दोषों से रहित होना चाहिए|

6. **जपकाले सदा मौनं समाचरेत्|** जप के समय मौन रहना चाहिए|

संवत् २०७८ का ग्रहण विवरण

संवत् 2078 में विश्व में चार ग्रहण लग रहे हैं। दो सूर्य व दो चन्द्र ग्रहण होंगे।

[1] **26.05.2021** को चन्द्रग्रहण चन्द्रोदय के समय आंशिक रूप से भारत के सुदूर पूर्वोत्तर भाग तथा पश्चिम बंगाल के कुछ भाग में ही दृश्य होगा। ग्रहण भारतीय मानक समयानुसार 15:15 से 18:24 तक होगा।

[2] **10.06.2021** को सूर्यग्रहण पूर्वोत्तर राज्य एवं जम्मू-कश्मीर राज्य के कुछ भागों में दृश्य होगा। ग्रहण भारतीय मानक समयानुसार 13:42 से 18:42 तक होगा।

[3] **19.11.2021** को चन्द्रग्रहण सुदूर पूर्वोत्तर राज्य के कुछ भाग में अल्प समय के लिए दृश्य होगा। चन्द्रोदय के समय भारत के सुदूर पूर्वोत्तर भागों अरुणाचल प्रदेश और आसाम के कुछ स्थानों पर मोक्ष अल्प समय के लिए दृश्य होगा। ग्रहण भारतीय मानक समयानुसार 12:45 से 16:15 तक होगा।

[4] **04.12.2021** का सूर्यग्रहण **भारत में दृश्य नहीं** होगा। भारत के अलावा अन्य देशों में दृश्य होगा। ग्रहण भारतीय मानक समयानुसार 10:59 से 15:10 तक होगा।

नोट:- ग्रहण जहाँ दृश्य होगा, सूतक वही के लिए मान्य होगा। चन्द्रग्रहण से पूर्व 09 घंटे तथा सूर्यग्रहण में 12 घंटे पहले ग्रहण का सूतक होता है।धर्मशास्त्रानुसार बालक, वृद्ध और रोगी को छोड़कर अन्य लोगों के लिए भोजन निषिद्ध है।

प्रमाण- **सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्।**

चन्द्रग्रहे तु यामास्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना।।

मेषादि द्वादश राशियों का वार्षिक राशिफल

मेष- यह वर्ष सामान्य रहेगा| स्वास्थ्य अच्छा रहेगा पारिवारिक उलझनों का सामना करना होगा| आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी| कार्यकलाप अच्छे तरह से सम्पन्न होगा| मानसिक उतार-चढ़ाव की स्थिति| पारिवारिक सदस्यों की उन्नति होगी| कार्य क्षेत्र में परिवर्तन की सम्भावना| कागजाती मामलों में मंद गति प्रगति होगी| प्रवासी जीवन, जुआ से दूर रहें | गुरु सफलता दिलायेंगे, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि, शत्रु आपसे दूर रहेंगे, सफलता के योग बन रहे हैं| मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे| पारिवारिक सुख की प्राप्ति| पदोन्नति, व्यपारवृद्धि सुख- सुविधाओं, वैभव- विलास की समाग्री के साथ-साथ भौतिक सुख की प्राप्ति, परीक्षा एवं कागजाती क्षेत्रों में सफलता, शुभ कार्यों का अवसर मिलेगा| 14.09.2021- 21.11.2021 तक कुछ व्यवधान उत्पन्न होगी| किया गया कार्य निष्फल हो जाएगा| धनहानि,अस्वस्थ शरीर | 21 नवम्बर के पश्चात समय शुभफलदायी होगा| 03, 09, 12 माह कष्टदायक है, अच्छा समय वर्षान्त तक बना रहेगा|

वृष- मध्यम फलकारक, मान-सम्मान में कमी, मानसिक हार, थका शरीर, उदास मन, धोखा खाया हुआ, निस्तेज चेहरा, खर्च की अधिकता, शारीरिक परेशानी, शनि अच्छा फल नहीं देंगे, परिजनों एवं मित्रों से अनबन होगा| आपके सहायक भी परेशान करेंगे| झुठा आरोप का भय, 14.09.2021- 21.09.2021 तक का समय बहुत अच्छा होगा| इस अवधि में अधूरें कार्य पूर्ण होगा, नौकरी तथा व्यवसाय में उन्नति, स्वास्थ्य अच्छा, उल्लेखनीय कार्य किये जायेंगे, पदाधिकार की प्राप्ति, सन्तान उन्नति, 21 नवम्बर के पश्चात गुरु परिवर्तित हो जायेंगे तो परेशानी आती रहेगी, राशि में भ्रमणशील राहु शुभ फलकारक होगा| मान-सम्मान की वृद्धि,

धनागमन, पुत्रादिको को आकास्मिक लाभ, मार्ग बनेंगे| शनि, गुरु की शान्ति लाभदायक है, संघर्ष के बाद सफलता, अध्ययन क्षेत्र में परिश्रम की अधिकता, सामाजिक कार्यों में प्रगति, वैवाहिक जीवन में कटूता, माता-पिता को तिर्थ व धार्मिक कार्यों का अवसर प्राप्त होगा| 01, 06, 11 माह कष्टदायक है

मिथुन- आपके लिए बृहस्पति सर्वथा अनुकूल है| स्वास्थ्य सुधरेगा, कार्य में वृद्धि होगी| आपके द्वारा प्रतिष्ठित कार्य का योग है, नुतन पदाधिकार की प्राप्ति, पुत्र उन्नति तथा मांगलिक कार्य होंगे, प्रायः सभी कार्यों में सफलता मिलेगी, स्थिर लाभ; भूमि, भवन, वाहन की प्राप्ति; 14 .09.2021- 21.11.2021 तक का समय अच्छा नहीं है| इन समयावधि में बखेरे खड़े हो जायेंगे; कार्य बाधित, रोग,शोक, बंधन की स्थिति, कष्टकर यात्राएँ, शारीरिक परेशानी, 21 नवम्बर के पश्चात समय पुनः अनुकूल हो जायेगा; रुके एवं अधुरें कार्यों में गति मिलेगी; शारीरिक एवं आर्थिक स्थिति सुधरेगी| घर परिवार में मांगलिक कार्य के योग, आपके उपर शनि की ढैय्या चल रही है अतः कुछ-न-कुछ परेशानी होते रहेंगे| घर- परिवार, स्त्री पुत्रादि एवं मित्रों से मतभेद की सम्भावना| जीवन साथी का स्वास्थ्य बिगड़ेगा, कुसंगति से बचे अन्यथा नुकसान होगा, घर- परिवार से दूर रहने का योग तथा शनि उलझनों को बढायेंगे, आर्थिक खर्च की स्थिति, मिठी वाणी का प्रयोग करें,कठिन परिश्रम, माता- पिता का स्वास्थ्य बाध्य रहेगा; जीवन में सामान्य सुख बुद्धि जनित कार्यों में बाधा पहुचेगी, शत्रुओं का बोलबाला, आपसी समझौता की सम्भावना; भाई बहनों के साथ मतभेद होता रहेगा, खर्च बढेगें| 02, 03, 09 माह कष्टदायक है|

कर्क- अष्टमभावगत बृहस्पति परेशानियाँ खड़े करेंगे, शारीरिक समस्याएं आयेगी, शत्रु तत्पर होकर हानि पहुचायेंगे; रोग, शोक, बंधन की समस्या खड़ी होगी; घर - परिवार से दूर रहना पड़ेगा; दौड़भाग में वर्ष व्यतीत होगा; नौकरी में प्रतिकुल स्थानान्तर ; पदाधिकारियों से मनमुटाव; न्यायिक प्रतिकुलता; राजकीय उलझन इत्यादि का सामना करना पड़ेगा; कठोर वाणी,सगे - संबंधी , परिजनों व मित्रों से विरोध, मुद्रा की कमी; व्यापारिक घाटा हो सकता है| 14.09.2021- 21.11.2021 तक का समय अच्छा रहेगा; इस अवधि में रुके तथा अधूरें कार्य पुरे होंगे; स्त्री, परिवार, मित्र से अच्छें तालमेल तथा भौतिक सुख की प्राप्ति; स्वास्थ्य सुधरेगा; 21 नवम्बर के पश्चात वर्षान्त तक का समय पुनः विपरीत कठिनाईयों से युक्त होगा; शनि के कारण घर-परिवार में विवाद होगा; जीवन संगिनी का स्वास्थ्य बिगड़ेगा; गुप्तरोग प्रकट हो सकतें है; मानसिक परेशानी, राहु- केतु लाभ दिलाते रहेंगे; मित्रों का सहयोग; धन प्राप्ति; भूमि, वाहन, मकान के क्रय-विक्रय का अच्छा वर्ष हैं; राजनीतिक संबंध दृढ होंगे; माता-पिता का स्वास्थ्य बाधा युक्त; परिवारजनों के बीच मांगलिक कृत्य ; बुद्धि जनित क्षेत्र अच्छा है; पेट से सम्बंधित परेशानी; अनपच जैसे समस्या; कमजोरी आदि से कष्ट; रमणीक स्थान की यात्राका योग; ऊचें पदाधिकारी से मेलजोल रखना आपके लिए उत्तम होगा| 04, 08, 10 माह कष्टदायक है

सिंह- सुखद वर्ष की आरंभ,भौतिक सुख-सुविधा; घर परिवार में मांगलिक कार्य; नौकरी,व्यवसाय में उन्नति; शारीरिक एवं भाग्य सुधारक समय; दैनिक सुख की प्राप्ति| सखा, संबंधी एवं मित्रों का सहयोग; बुद्धि जनित तथा वाणी व व्यवहार में मिठास आयेगा; 14.09.2021- 21.11.2021 तक का समय कुछ अच्छा नहीं रहेगा; जैसे शारीरिक परेशानी, राजकीय कार्य में रुकावट तथा परिस्थिति आपसे विपरीत; वर्ष पर्यन्त शनि अनुकूल रहेगा, रोग एवं शत्रु पर विजय प्राप्त करेंगे; प्रेम संबंध में विश्वास दृढ होगा; विवाहादि कार्य के अवसर प्राप्त होंगे;

तीर्थाटन, धार्मिक स्थलों के यात्रा के योग; अच्छे कार्य,सामाजिक प्रतिष्ठा, दान- पुण्य इत्यादि में रुचि; अच्छे समय का लाभ; रुके धन की प्राप्ति; नौकरी, व्यापार में लाभ, मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, खरीद- बिक्री का अच्छा योग; अपने संबंधी को पीड़ा; शुरुआती दौर में वाहन से भय; मुद्रा में लाभ; मनोरंजन की प्राप्ति; अध्ययन क्षेत्र में लाभ; न्यायिक कार्यों में सफलता प्राप्त होंगे| 03, 11, 12 माह कष्टदायक है|

कन्या- यह वर्ष आपके लिए मध्यम फलकारक है; गुरु के कारण उदासीभाव छाया रहेगा; अच्छी वस्तु, सुन्दर व्यक्ति, प्रभावित नहीं कर पायेंगे; मानसिक तनाव बना रहेगा; शान्ति का अभाव है; मन में विशेष उलझन रहेगी; असमंजस की उपस्थिति,मुद्रा की कमी; कार्यों में व्यवधान; पंचम शनि अच्छा फलकारक नहीं; घर- परिवार से दूर रहना पर सकता है; प्रायः विवाद होता रहेगा अत: पारिवारिक वातावरण दूषित होगा; 14.09.2021- 21.11.2021 तक की अवधि आपके लिए बहुत अच्छा होगा; इस समय के अन्तर्गत रुके एवं अधूरें कार्य बनेंगे; मन प्रभुलित होगा; उल्लेखनीय कार्य का अवसर मिलेगा| धन में लाभ अर्थात् मुद्रा में लाभ; घर, स्त्री, परिवार व सहयोगियों से उत्तम सुख की अनुभूति, सानिध्य की प्राप्ति; अचानक कार्य में सफलता; राहु-केतु आपके लिए अच्छा फलकारक है| 21 नवम्बर के पश्चात समय एवं ग्रह के फेर से परेशानियां खड़े होंगे; अतिरिक्त धन व्यय करना उचित नहीं है; पारिवारिक स्वास्थ्य बाधा युक्त ; सामाजिक प्रतिष्ठा की प्राप्ति; उत्तम कार्य का अवसर; साझेदारी कार्य में विध्न- वाधाओं की उपस्थिति; पशुओं को रोग; मतभेद में सुधार होगा; धार्मिक कृत्यों से वंचित रहेंगे| पारिवारिक चिंता से घिरे रहेंगे; न्यायिक कार्यों में लाभ; गुरु-शनि अच्छे नहीं है| 03,10,12 माह कष्टदायक है|

तुला- पंचमस्थ बृहस्पति उत्तम फलकारक है; अधिनस्थ कार्यों में सफलता; आपके सहयोगी लोग सेवा में तत्पर रहेंगे; भौतिक सुख- सुविधा की प्राप्ति; उल्लेखनीय कार्य में सफलता; बौद्धिक क्षमता बढेगी; भूमि,भवन, वाहन से सुख की प्राप्ति; पुस्तानी धन की प्राप्ति; नौकरी, व्यवसाय में वृद्धि; प्रेम संबंध में दृढ़ता; मांगलिक कार्य का योग; 14.09.2021- 21.11.2021 अन्तर्गत ग्रह का प्रभाव हल्का रहेगा; कुछ परेशानियां उत्पन्न होंगे; चतुर्थभाव का शनि ढैय्या की स्थिति बनाये हुए है; अतः शनि को प्रसन्न करें; कार्य धीमी गति से होंगे; भाई- बहनों की उन्नति; बाल बच्चों को शारीरिक पीड़ा; आर्थिक कष्ट, पारिवारिक उलझनों में पड़ सकते हैं| माता-पिता से मतभेद; भूमि,भवन, वाहन विक्रय के लिए अच्छा वर्ष नहीं ; बुद्धि जनित क्षेत्रों में अवरोध, अध्ययन की कमी; सन्तान से सामान्य सहयोग ; वैवाहिक जीवन मध्यम रहेगा; विरोधी उत्पन्न होंगे; कागजाती कार्य में स्थिरता; राहु- केतु लाभ दिलायेंगे; नेत्र जनित कष्ट पुनः 21 नवम्बर के पश्चात आगामी समय अच्छा होगा अत: अच्छा लाभ प्राप्ति का समय है| 01,09,12 माह कष्टदायक है|

वृश्चिक- यह वर्ष गुरु के फल स्वरूप अनेक प्रकार के कठिनाई भरी दौर किन्तु शनि शुभ फलकारक है; कठिनाइयों को झेलते हुए कार्य में सफलता मिलेगी, लेकिन कुछ-न- कुछ कमी रह जायेगी और सन्तुष्ट न होंगे; कार्य में भरपूर प्रयास करेंगे, जिस कारण अधिकारियों से आपके कार्य में कमी निकाली जायेगी, इस कारणवश मानसिक परेशानी उत्पन्न होंगे; आया हुआ कार्य दूसरे के हाथ में चले जायेंगे; शनि भूमि,भवन, से स्थिर लाभ दिलायेंगे; शत्रु आपसे सुलह की कोशिश करेंगे, शारीरिक परेशानी आयेंगे| राहु वायु, पीत, नजरदोष से संबंधित परेशानियां खड़ी करेंगे| राशिगत केतु से पुत्रादि उन्नति करायेंगे; निर्माण कार्य का अवसर; कार्य

क्षेत्र में उत्तम लाभ; धन वृद्धि, घर- परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे; जीवन साथी का स्वास्थ्य अनुकूल ; संयम रखने का मौका; वर्ष के द्वितीयार्द्ध में प्रतिष्ठित/सम्मानित व्यक्तियों से सम्पर्क; मनोरंजन भरी यात्रा; बौद्धिक कार्य की सफलता, गुरु के उपाय करने से होगा| 02,07,09 माह कष्टदायक है|

धनु- तृतीय भावगत बृहस्पति पद-प्रतिष्ठा में कमी लायेगा; आपके कार्यों में विध्न- बाधा आयेगी; शारीरिक परेशानी; सगे-संबंधी, परिजनों से विवादित लड़ाई झगड़े होते रहेंगे; यात्राएँ निष्फल; 14.09.2021-21.11.2021 का समयावधि कुछ अनुकुल होगा; इस समयान्तर्गत कई काम बनेंगे; स्वास्थ्य में सुधार; रोग से छुटकारा; परिवार में मांगलिक उत्सव; शत्रुओं से समझौता अथवा हार मानेंगे; मान-सम्मान में वृद्धि; उल्लेखनीय कार्य का श्रीगणेश होगा; सम्पत्ति में वृद्धि का योग है। शनि की ऊतरती साढ़े साती का दौर है जो शुभ फलकारक है; राहु-केतु नजर एवं बिमारी नये शिरे से पैदा करेंगे| उदर एवं नेत्र जनित समस्या से परेशान रहेंगे; व्यर्थ के विवाद से सावधान रहें; भाई-बहनों के उन्नति का योग; भूमि,वाहन खरीद-बिक्री न करें; खाने-पीने पर परहेज; परिवार में रोग की अधिकता; विरोधी का बोलबाला बढेगा; कृषिजन्य व्यापार में लाभ; जुन के बाद आय में लाभ; बने कार्य में अवरोध; वर्ष के द्वितीयार्द्ध में वाहन से चोट-चपेट; दौरभाग, अधिक खर्चे से परेशानियां; बुद्धि-विवेक आपके लिए कल्याणकारी साबित होंगे| गुरु, शनि, राहु केतु का उपाय कल्याणकारी है| 07,10,11 माह कष्टदायक है|

मकर- अनुकूल परिस्थितियों के साथ वर्षारम्भ ; रुके एवं अधूरें कार्य पूर्ण होंगे; धन-सम्पत्ति में वृद्धि, लाभ का योग; शत्रु पराजित तथा समझौता करेंगे; प्रेम संबंध दृढ तथा स्त्री परिवार से सुख की प्राप्ति मांगलिक कार्य का अवसर; समाज एवं कार्य क्षेत्रों में सम्मानित होंगे; नये पदाधिकार की प्राप्ति; मानसिक विकारों से मुक्ति; अच्छे कार्यों में वृद्धि; भूमि,भवन,वाहनों का सुख; जमीन- जायदात कार्यों में प्रगति; 14.09.2021-21.11.2021 तक के अवधि में गुरु आपके राशि में संचार करते रहेंगे अत: परेशानियां खड़ी होगी; खर्चिला समय; बुद्धि भ्रम की स्थिति; मान-सम्मान में कमी; व्यर्थ के लड़ाई- झगड़े होंगे; शनि के साढ़े साती के कारण मानसिक, स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आयेंगे; व्यापार से लाभ, अचानक स्थानांतर की सम्भावना; मान- सम्मान में वृद्धि; माता-पिता से सहयोग; विद्या क्षेत्र में मेहनत; वैवाहिक जीवन में कटुतापूर्ण दौर तथा स्त्री से मतभेद; शुरुआती दौर में चोट-चपेट ; रोग और शत्रुओं पर धन व्यय; मांगलिक कृत्य होंगे; धर्मस्थल की यात्रा होंगे; 21 नवम्बर के पश्चात समय अच्छे बनेंगे; बिगड़े कार्य बनेंगे; राहु -केतु अचानक लाभ की स्थिति; ग्रहशान्ति से लाभ; 01,07,09 माह कष्टदायक है|

कुम्भ- आपके राशिगत बृहस्पति समस्याएं खड़ी करेगा; खर्च के साथ-साथ परिस्थिति डगमगायेगा; बुद्धि भ्रमित; सोच विचार की क्षमता समाप्त; निर्णायक असमंजस की स्थिति; पद-प्रतिष्ठा में कमी; व्यर्थ की लड़ाई-झगड़े; पारिवारिक सुख- शान्ति भंग होगा; रोजी-रोजगार में टेन्शन तथा रुकावटें आयेंगी; न्याय कार्य बाधक रहेगा; आपके राशि से बारहवें शनि देव का प्रकोप; साढे साती का प्रकोप; जिससे परेशानी बढ जाएगी; राहु-केतु स्थान परिवर्तन करेंगे; घर- परिवार से दूर रहने की स्थिति; शनि और गुरु का प्रकोप है, शान्ति करावें| भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च ; धन की कम; पारिवारिक परेशानी से मन छुब्ध रहेगा, मित्रों से मतभेद; वर्ष के प्रारंभ में चोट-चपेट की आशंका; उदर, नेत्र जनित कष्ट; भाई-बहनों की उन्नति; माता-पिता को शारीरिक परेशानी; व्यापार में अल्प लाभ; नयें

व्यापार की ओर आकृष्ट होंगे; बुद्धि जनित कार्यों में धन व्यय; भूमि क्रय-विक्रय न करें; वैवाहिक जीवन में बाधाएं; भौतिक सुख; अत्यधिक खर्च ; गुरु,शनि,राहु व केतु का निवारण लाभदायक होगा| 03,10,11 माह कष्टदायक है|

मीन- आपके लिए एकादशभाव का शनि अत्यधिक फलकारक है; साहस भरी कार्य में वृद्धि; समस्त कार्य पूर्ण करने में सदैव तत्पर रहने वाले होंगे; कार्य में वृद्धि; आपके सोच से अधिक लाभ; भविष्य में परेशानी खड़ी होगी; द्वादश भाव का बृहस्पति खर्च कराता रहेगा; कभी-कभी अपयश मिलेगा; 14.09.2021- 21.11.2021 तक का समय अत्यन्त शुभकारी रहेगा; इस समयावधि में रुके या अधूरें कार्य की पूर्णता होगी; राहु शत्रुओं पर विजय प्राप्त करायेगा; 21 नवम्बर के पश्चात बृहस्पति हल्का हो जायेंगे, पुनः परेशानियां खड़ी हो जायेगी अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्य रहेगा; विरोधियों का आतंक बढेगा; अध्ययन- अध्यापन क्षेत्र में बाधक रहेगा; घर- परिवार में मांगलिक कार्य का योग है; रुके धन का आगमन; यात्रायें संभव है; प्रयास करने पर धन का मार्ग खुलेगा तथा लाभ होगा; मनोरंजन के लिए खर्च बढेंगे; भाई-बहनों का विश्वास बना रहेगा; क्रय-विक्रय का समय अच्छा रहेगा; कर्ज प्राप्ति का योग बन रहा है; विद्याध्ययन क्षेत्र में प्रगति होगी; संतान की उन्नति; विरोधियों का दबदबा कम होगा; दाम्पत्य सुख में वृद्धि; नौकरी में उन्नति; व्यापार में वृद्धि तथा सफल यात्रा होंगे; 21 नवम्बर के पश्चात बृहस्पति हल्का पर जायेंगे; इस वर्ष शनि आपके लिए अच्छे है अतः भूमि,भवन आदि स्थिर कार्य होंगे जिससे लाभ की प्राप्ति होगी; बृहस्पति का उपाय करते रहने से आपका भाग्य साथ देगा; आपके लिए 02, 08,10 माह कष्टदायक है|

वर्षफल २०२१- २२

इस वर्ष के आरम्भ में फसलों की हानि, अन्न, घी- तेल व तेलहन आदि महँगे होंगे; प्रजा सुखी रहेगा; आनन्द संवत्सर के प्रभाव समाप्त हो जाने पर कोदो, धान, मूँग, उड़द आदि सब अन्न में क्षति; प्रजा पीड़ित रहेगा| राजा मंगल से मनुष्य को अग्नि का भय, चोर का उत्पात, मंत्री,नेताओं में विग्रह, प्रजा को दु:ख, रोग से पीड़ा तथा मेघ अल्प वर्षा| मंत्री मंगल से चोर तथा रोग से प्रजा पीड़ित, अपने क्षेत्रों में नेताओं का जय, सुख की वृद्धि, गौ माता से अल्प दुग्ध की प्राप्ति| सस्यपति शुक्र से उत्तम वर्षा, गेहूँ, धान, ईख, नागरमोथा, कंगुनी का उत्तम उत्पादन होगा, वृक्षों में फल, फूल सुखकारक| रसपति सूर्य से वर्षा में कमी, रस पदार्थों का अल्प उत्पादन, भोग्य साधन की कमी महसूस, प्रजा को वस्त्र, तेल, घी आदि अधिक प्रिय, धनी व्यापारी, मंत्री आदि को सुख की प्राप्ति| निरसपति शुक्र से कर्पूर, अगर, तगर आदि सुन्दर गंधीय पदार्थों, सुवर्ण, मोती, रत्न तथा वस्त्रों का महँगा भाव| मेघपति मंगल से अल्प वर्षा प्रजा को संतापदायक होगी| रोहिणी का वास समुद्र में जो तटीय क्षेत्रों से लेकर अधिक वर्षा होगी| लुट- पाट की घटना, देश व राजा सहित प्रजा का यश बढेगा, धार्मिक विरोधाभास|

शिववास तिथि

शुक्लपक्ष- २,५,६,९,१२,१३|कृष्णपक्ष- १,४,५,८,११,१२,३०|

विधि= (शुक्लापक्षादि तिथि संख्या×२+५)÷७=१|२|३| शेष शुभ अन्य अशुभ

अग्निवास ज्ञान

अग्निवास ज्ञान विधि= (शुक्लपक्षादि तिथि संख्या + सूर्यादिवार संख्या +१)÷४= ०|३ शेष शुभ अन्य अशुभ

अच्युताष्टकम् १

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।

श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥ १॥

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम् ।

इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दनं सन्दधे ॥ २॥

विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे रुक्मिणिरागिणे जानकीजानये ।

वल्लवीवल्लभायाऽर्चितायात्मने कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥ ३॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ।

अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥ ४॥

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः ।

लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितोऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम् ॥ ५॥

धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद्द्वेषिणां केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः ।

पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो बालगोपालकः पातु माम् सर्वदा ॥ ६॥

विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।

वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ॥ ७॥

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमाननं रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः ।

हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥ ८॥

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।

वृत्ततः सुन्दरं कर्तृ विश्वम्भरस्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ॥ ९॥

॥ मधुराष्टक् ॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।

हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ १॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।

चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ २॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।

नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।

रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।

वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ५॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।

सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम् ।

दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।

दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ८॥

श्रीभैरवाष्टकम्

सकलकलुषहारी धूर्तदुष्टान्तकारी

सुचिरचरितचारी मुण्डमौञ्जीप्रचारी ।

करकलितकपाली कुण्डली दण्डपाणिः

स भवतु सुखकारी भैरवो भावहारी ॥ १॥

विविधरासविलासविलासितं नववधूरवधूतपराक्रमम् ।

मदविधूर्णितगोष्पदगोष्पदं भवपदं सततं सततं स्मरे ॥ २॥

अमलकमलनेत्रं चारुचन्द्रावतंसं

सकलगुणगरिष्ठं कामिनीकामरूपम् ।

परिहृतपरितापं डाकिनीनाशहेतुं

भज जन शिवरूपं भैरवं भूतनाथम् ॥ ३॥

सबलबलविघातं क्षेत्रपालैकपालं

विकटकटिकरालं ह्यट्टहासं विशालम् ।

करगतकरवालं नागयज्ञोपवीतं

भज जन शिवरूपं भैरवं भूतनाथम् ॥ ४॥

भवभयपरिहारं योगिनीत्रासकारं

सकलसुरगणेशं चारुचन्द्रार्कनेत्रम् ।

मुकुटरुचिरभालं मुक्तमालं विशालं

भज जन शिवरूपं भैरवं भूतनाथम् ॥ ५॥

चतुर्भुजं शङ्खगदाधरायुधं

पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम् ।

श्रीवत्सलक्ष्मीं गलशोभिकौस्तुभं

शीलप्रदं शङ्करक्षणं भजे ॥ ६॥

लोकाभिरामं भुवनाभिरामं

प्रियाभिरामं यशसाभिरामम् ।

कीर्त्याभिरामं तपसाऽभिरामं

तं भूतनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ७॥

आद्यं ब्रह्मसनातनं शुचिपरं सिद्धिप्रदं कामदं

सेव्यं भक्तिसमन्वितं हरिहरैः सहं साधुभिः ।

योग्यं योगविचारितं युगधरं योग्याननं योगिनं

वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं सत्सेवितं भैरवम् ॥ ८॥

॥ फलश्रुतिः ॥

भैरवाष्टकमिदं पुण्यं प्रातःकाले पठेन्नरः ।

दुःस्वप्ननाशनं तस्य वाञ्छितर्थफलं भवेत् ॥ ९॥

राजद्वारे विवादे च सङ्ग्रामे सङ्कटेत्तथा ।

राज्ञाक्रुद्धेन चाऽऽज्ञप्ते शत्रुबन्धगतेतथा

दारिद्रश्चदुःखनाशाय पठितव्यं समाहितैः ।

न तेषां जायते किञ्चिद दुर्लभं भुवि वाञ्छितम् ॥१०॥

श्रीभैरवाष्टकम्-२

श्रीभैरवो रुद्रमहेश्वरो यो महामहाकाल अधीश्वरोऽथ ।

यो जीवनाथोऽत्र विराजमानः श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥ १॥

पद्मासनासीनमपूर्वरूपं महेन्द्रचर्मोपरि शोभमानम् ।

गदाऽब्ज पाशान्वित चक्रचिह्नं श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥ २॥

यो रक्तगोरश्च चतुर्भुजश्च पुरः स्थितोद्भासित पानपात्रः ।

भुजङ्गभूयोऽमितविक्रमो यः श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥ ३॥

रुद्राक्षमाला कलिकाङ्गरूपं त्रिपुण्ड्रयुक्तं शशिभाल शुभ्रम् ।

जटाधरं श्वानवरं महान्तं श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥ ४॥

यो देवदेवोऽस्ति परः पवित्रः भुक्तिञ्च मुक्तिं च ददाति नित्यम् ।

योऽनन्तरूपः सुखदो जनानां श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥ ५॥

यो बिन्दुनाथोऽखिलनादनाथः श्रीभैरवीचक्रपनागनाथः ।

महाद्भूतो भूतपतिः परेशः श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥ ६॥

ये योगिनो ध्यानपरा नितान्तं स्वान्तःस्थमीशं जगदीश्वरं वै ।

पश्यन्ति पारं भवसागरस्य श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥ ७॥

धर्मध्वजं शङ्कररूपमेकं शरण्यमित्थं भुवनेषु सिद्धम् ।

द्विजेन्द्रपूज्यं विमलं त्रिनेत्रं श्रीभैरवं तं शरणं प्रपद्ये ॥ ८॥

भैरवाष्टकमेतद् यः श्रद्धा भक्ति समन्वितः ।

सायं प्रातः पठेन्नित्यं स यशस्वी सुखी भवेत् ॥ ९॥

श्रीरुद्राष्टकम्

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।

निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥ १॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ।

करालं महाकालकालं कृपालं गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ॥ २॥

तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं मनोभूतकोटिप्रभा श्रीशरीरम् ।

स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥ ३॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।

मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥ ४॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशमखण्डमजं भानुकोटिप्रकाशम् ।

त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ ५॥

कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।

चिदानन्दसन्दोहमोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ ६॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।

न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥ ७॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।

जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥ ८॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

श्रीरघुनाथमङ्गलस्तोत्रम्

मङ्गलं लोकरामाय रघुरामाय मङ्गलम् ।

मङ्गलं पद्मवक्त्राय रामभद्राय मङ्गलम् ॥ १॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय रामचन्द्राय मङ्गलम् ।

मङ्गलं मम नाथाय रघुनाथाय मङ्गलम् ॥ २॥

मङ्गलं रणधीराय रघुवीराय मङ्गलम् ।

मङ्गलं सत्यसन्धाय राजसिंहाय मङ्गलम् ॥ ३॥

मङ्गलं निरवद्याय वेदवेद्याय मङ्गलम् ।

मङ्गलं मुक्तिमूलाय मेघनीलाय मङ्गलम् ॥ ४॥

मङ्गलं सत्वरध्वस्तरुद्रचापाय मङ्गलम् ।

मङ्गलं जानकीनेत्रपूर्णपात्राय मङ्गलम् ॥ ५॥

मङ्गलं मिथिलानाथमौलिरत्नाय मङ्गलम् ।

मङ्गलं निस्सपत्नाय मङ्गलं नीलशालिने ॥ ६॥

मङ्गलं मैथिलीधन्यवनवासाय मङ्गलम् ।

मङ्गलं लक्ष्मणोपात्तभृत्यकृत्याय मङ्गलम् ॥ ७॥

मङ्गलं गुहसङ्गेन गङ्गाकूलनिवासिने ।

मङ्गलं गौतमीतीरपारिजाताय मङ्गलम् ॥ ८॥

मङ्गलं दण्डकारण्यवासिनिर्वातचेतसे ।

मङ्गलं शबरीदत्तफलमूलाभिलाषिणे ॥ ९॥

मङ्गलं सद्गुणारोपचापहस्ताय मङ्गलम् ।

मङ्गलं वायुपुत्रेण वन्दनीयाय मङ्गलम् ॥ १०॥

मङ्गलं वालिसुग्रीवहर्षशोकाभिघातिने।
मङ्गलं मैथिलीमौलिमणिरञ्जितवक्षसे॥ ११॥
मङ्गलं सर्वलोकानां शरण्याय महीयसे।
मङ्गलं सागरोत्साहशृङ्गभङ्गविधायिने॥ १२॥
मङ्गलं वासवामित्रमर्दनोवृत्तबाहवे।
मङ्गलं विश्वमित्राय विद्रावणदयादृशे॥ १३॥
मङ्गलं वीक्षमाणाय मैथिलीवदनाम्बुजम्।
मङ्गलं विनिवृत्ताय पुरं पौरनिवृत्तये॥ १४॥
मङ्गलं भरतप्रीतिप्राप्तराज्याय मङ्गलम्।
मङ्गलं मैथिलीयोगमहनीयाय मङ्गलम्॥ १५॥
मङ्गलं हारकोटीरपादपीठाय मङ्गलम्।
मङ्गलं रणधुर्याय तुङ्गपन्नगशायिने॥ १६॥
मङ्गलं सह्यजामात्यसान्निध्यकृतचेतसे।
मङ्गलं मानुषे लोके वैकुण्ठमिति तिष्ठते॥ १७॥
शेषशैलनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्।
मङ्गलं वेधसो वेदिमेदिनीग्रहमेधिने॥ १८॥
वरदाय दयाधाम्ने वीरोदाराय मङ्गलम्।
मङ्गलं धनदादानदत्तसक्तिषि सम्पदे ॥ १९॥
मङ्गलं नारसिंहाय नरसिंहाय मङ्गलम्।
मङ्गलं मामहीनीलानित्यमुक्तैकचक्षुषे॥ २०॥

य इदं कीर्तयेन्नित्यं मङ्गलं मङ्गलस्तवम्।
वर्तयेत् पुरतस्तस्य मङ्गलायतनं हरिः॥ २१॥

श्रीरामभुजंगस्तोत्र

विशुद्धं परं सच्चिदानन्दरूपम्
गुणाधारमाधारहीनं वरेण्यम्।
महान्तं विभान्तं गुहान्तं गुणान्तं
सुखान्तं स्वयं धाम रामं प्रपद्ये॥ १॥
शिवं नित्यमेकं विभुं तारकाख्यं
सुखाकारमाकारशून्यं सुमान्यम्।
महेशं कलेशं सुरेशं परेशं
नरेशं निरीशं महीशं प्रपद्ये॥ २॥
यदावर्णयत्कर्णमूलेऽन्तकाले
शिवो राम रामेति रामेति काश्याम्।
तदेकं परं तारकब्रह्मरूपं
भजेऽहं भजेऽहं भजेऽहं भजेऽहम्॥ ३॥
महारत्नपीठे शुभे कल्पमूले
सुखासीनमादित्यकोटिप्रकाशम्।
सदा जानकीलक्ष्मणोपेतमेकं
सदा रामचन्द्रम् भजेऽहं भजेऽहम् ॥ ४॥
क्वणद्रत्नमञ्जीरपादारविन्दम्
लसन्मेखलाचारुपीताम्बराढ्यम्।
महारत्नहारोल्लसत्कौस्तुभाङ्गं
नदच्चंचरीमंजरीलोलमालम्॥ ५॥
लसच्चन्द्रिकास्मेरशोणाधराभम्
समुद्यत्पतङ्गेन्दुकोटिप्रकाशम्।
नमद्ब्रह्मरुद्रादिकोटीररत्न-
स्फुरत्कान्तिनीराजनाराधिताङ्घ्रिम्॥ ६॥
पुरः प्राञ्जलीनाञ्जनेयादिभक्तान्
स्वचिन्मुद्रया भद्रया बोधयन्तम्।
भजेऽहं भजेऽहं सदा रामचन्द्रं
त्वदन्यं न मन्ये न मन्ये न मन्ये॥ ७॥
यदा मत्समीपं कृतान्तः समेत्य
प्रचण्डप्रतापैर्भटैर्भीषयेन्माम्।
तदाविष्करोषि त्वदीयं स्वरूपं
तदापत्प्रणाशं सकोदण्डबाणम्॥ ८॥
निजे मानसे मन्दिरे संनिधेहि
प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र।
ससौमित्रिणा कैकेयीनन्दनेन
स्वशक्त्यानुभक्त्या च संसेव्यमान॥ ९॥
स्वभक्ताग्रगण्यैः कपीशैर्महीशै-

रनीकैरनेकैश्च राम प्रसीद ।

नमस्ते नमोऽस्त्वीश राम प्रसीद

प्रशाधि प्रशाधि प्रकाशं प्रभो माम् ॥ १० ॥

त्वमेवासि दैवं परं मे यदेकं

सुचैतन्यमेतत्त्वदन्यं न मन्ये।

यतोऽभूदमेयं वियद्वायुतेजो-

जलोर्व्यादिकार्यं चरं चाचरं च ॥ ११ ॥

नमः सच्चिदानन्दरूपाय तस्मै

नमो देवदेवाय रामाय तुभ्यम्।

नमो जानकीजीवितेशाय तुभ्यं

नमः पुण्डरीकायताक्षाय तुभ्यम् ॥ १२ ॥

नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय तुभ्यं

नमः पुण्यपुञ्जैकलभ्याय तुभ्यम्।

नमो वेदवेद्याय चाद्याय पुंसे

नमः सुन्दरायेन्दिरावल्लभाय ॥ १३ ॥

नमो विश्वकर्त्रे नमो विश्वहर्त्रे

नमो विश्वभोक्त्रे नमो विश्वमात्रे।

नमो विश्वनेत्रे नमो विश्वजेत्रे

नमो विश्वपित्रे नमो विश्वमात्रे ॥ १४ ॥

नमस्ते नमस्ते समस्तप्रपञ्च-

प्रभोगप्रयोगप्रमाणप्रवीण।

मदीयं मनस्त्वत्पदद्वन्द्वसेवां

विधातुं प्रवृत्तं सुचैतन्यसिद्ध्यै ॥ १५ ॥

शिलापि त्वदन्घ्रिक्षमासङ्गिरेणु-

प्रसादाद्धि चैतन्यमाधत्त राम।

नरस्त्वत्पदद्वन्द्वसेवाविधाना-

त्सुचैतन्यमेतेति किं चित्रमद्य ॥ १६ ॥

पवित्रं चरित्रं विचित्रं त्वदीयं

नरा ये स्मरन्त्यन्वहं रामचन्द्र।

भवन्तं भवान्तं भरन्तं भजन्तो

लभन्ते कृतान्तं न पश्यन्त्यतोऽन्ते ॥ १७ ॥

स पुण्यः स गण्यः शरण्यो ममायं

नरो वेद यो देवचूडामणिं त्वाम्।

सदाकारमेकं चिदानन्दरूपं

मनोवागगम्यं परन्धाम राम ॥ १८ ॥

प्रचण्डप्रतापप्रभावाभिभूत-

प्रभूतारिवीर प्रभो रामचन्द्र।

बलं ते कथं वर्ण्यतेऽतीव बाल्ये

यतोऽखण्डि चण्डीशकोदण्डदण्डः ॥ १९ ॥

दशग्रीवमुग्रं सपुत्रं समित्रं

सरिद्दुर्गमध्यस्थरक्षोगणेशम्।

भवन्तं विना राम वीरो नरो वा-

ऽसुरो वाऽमरो वा जयेत्कस्त्रिलोक्याम् ॥ २० ॥

सदा राम रामेति रामामृतं ते

सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम्।

पिबन्तं नमन्तं सुदन्तं हसन्तं

हनूमन्तमन्तर्भजे तं नितान्तम् ॥ २१ ॥

सदा राम रामेति रामामृतम् ते

सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम्।

पिबन्नन्वहं नन्वहं नैव मृत्यो-

र्बिभेमि प्रसादादसादात्तवैव ॥ २२ ॥

असीतासमेतैरकोदण्डभूशै-

रसौमित्रिवन्द्यैरचण्डप्रतापैः।

अलङ्केशकालैरसुग्रीवमित्रै-

ररामाभिधेयैरलम् देवतैर्नः ॥ २३ ॥

अवीरासनस्थैरचिन्मुद्रिकाढ्यै-

रभक्ताञ्जनेयादितत्त्वप्रकाशैः।

अमन्दारमूलैरमन्दारमालै-

ररामाभिधेयैरलम् देवतैर्नः ॥ २४ ॥

असिन्धुप्रकोपैरवन्द्यप्रतापै-

रबन्धुप्रयाणैरमन्दस्मिताढ्यैः।

अदण्डप्रवासैरखण्डप्रबोधै-

ररामभिदेयैरलम् देवतैर्नः ॥ २५ ॥

हरे राम सीतापते रावणारे

खरारे मुरारेऽसुरारे परेति।

लपन्तं नयन्तं सदाकालमेव

समालोकयालोकयाशेषबन्धो ॥ २६ ॥

नमस्ते सुमित्रासुपुत्राभिवन्द्य

नमस्ते सदा कैकयीनन्दनेड्य।

नमस्ते सदा वानराधीशवन्द्य

नमस्ते नमस्ते सदा रामचन्द्र ॥ २७ ॥

प्रसीद प्रसीद प्रचण्डप्रताप

प्रसीद प्रसीद प्रचण्डारिकाल।

प्रसीद प्रसीद प्रपन्नानुकम्पिन्

प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र ॥ २८ ॥

भुजङ्गप्रयातं परं वेदसारं

मुदा रामचन्द्रस्य भक्त्या च नित्यम्।

पठन् सन्ततं चिन्तयन् स्वान्तरङ्गे

स एव स्वयम् रामचन्द्रः स धन्यः ॥ २९ ॥

श्रीसरस्वतीस्तुती

या कुन्देन्दु-तुषारहार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृता

या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।

या ब्रह्माच्युत-शंकर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता

सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥ १॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिमयीमक्षमालां दधाना

हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।

भासा कुन्देन्दु-शंखस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना

सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥ २॥

आशासु राशी भवदंगवल्लि

भासैव दासीकृत-दुग्धसिन्धुम्।

मन्दस्मितैर्निन्दित-शारदेन्दुं

वन्देऽरविन्दासन-सुन्दरि त्वाम् ॥ ३॥

शारदा शारदाम्बोजवदना वदनाम्बुजे।

सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥ ४॥

सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृ-देवताम्।

देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः ॥ ५॥

पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती।

प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या ॥ ६॥

शुद्धां ब्रह्मविचारसारपरमा-माद्यां जगद्व्यापिनीं

वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।

हस्ते स्पाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां

वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ ७॥

वीणाधरे विपुलमंगलदानशीले

भक्तार्तिनाशिनि विरिंचिहरीशवन्द्ये।

कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे

विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥ ८॥

श्वेताब्जपूर्ण-विमलासन-संस्थिते हे

श्वेताम्बरावृतमनोहरमंजुगात्रे।

उद्यन्मनोज्ञ-सितपंकजमंजुलास्ये

विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥ ९॥

मातस्त्वदीय-पदपंकज-भक्तियुक्ता

ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।

ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण

भूवह्नि-वायु-गगनाम्बु-विनिर्मितेन ॥ १०॥

मोहान्धकार-भरिते हृदये मदीये

मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे।

स्वीयाखिलावयव-निर्मलसुप्रभाभिः

शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम् ॥ ११॥

ब्रह्मा जगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः

शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः।

न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे

न स्युः कथंचिदपि ते निजकार्यदक्षाः ॥ १२॥

लक्ष्मिर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तृष्टिः प्रभा धृतिः ।

एताभिः पाहि तनुभिरष्टभिर्मां सरस्वती ॥ १३॥

सरसवत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः

वेद-वेदान्त-वेदांग- विद्यास्थानेभ्य एव च ॥ १४॥

सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने ।

विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तु ते ॥ १५॥

यदक्षर-पदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।

तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ १६॥

भवान्यष्टकं

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता

न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।

न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ १॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरु

प्रपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।

कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ २॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं

न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।

न जानामि पूजां न च न्यासयोगं

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं

न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।

न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्-

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ४॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः

कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।

कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं

दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।

न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे

जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।

अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो

महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।

विपत्तौ प्रविष्टः प्रनष्टः सदाहं

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ८॥

भगवतीस्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे जय पापविनाशिनि बहुफलदे ।

जय शुम्भ-निशुम्भ कपालधरे प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे ॥ १॥

जय चन्द्रदिवाकर-नेत्रधरे जय पावकभूषितवक्त्रवरे ।

जय भैरवदेहनिलीनपरे जय अन्धकदैत्यविशोषकरे ॥ २॥

जय महिषविमर्दिनिशूलकरे जय लोकसमस्तकपापहरे ।

जय देवि पितामहविष्णुनुते जय भास्करशक्रशिराऽवनते ॥ ३॥

जय षण्मुख-सायुध-ईशनुते जय सागरगामिनि शम्भुनुते ।

जय दुःख-दरिद्र-विनाशकरे जय पुत्रकल त्रविवृद्धिकरे ॥ ४॥

जय देवि समस्तशरीरधरे जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे ।

जय व्याधिविनाशिनि मोक्षकरे जय वांछितदायिनि सिद्धिकरे ॥ ५॥

एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः ।

गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा ॥ ६॥

नवदुर्गास्तुतिः

शैले वसन्ती परमेश्वरस्य प्रिया शिवानी गिरिराजपुत्री ।

विद्या प्रशस्ता जगदम्बिका सा चाद्या नमस्ते खलु शैलपुत्री ॥ १॥

शङ्खेन्दुकुन्दसङ्काशां कमण्डलुधरां शिवाम् ।

चाक्षमालाधरां वन्दे ब्रह्मचारिणीमातरम् ॥ २॥

तप्तकाञ्चनवर्णाभां पूर्णचन्द्राननत्रयाम् ।

चन्द्रघण्टामहं वन्दे क्रूरदृष्टिसमन्विताम् ॥ ३॥

सुराकुम्भधरां रौद्रीमष्टबाहुसमन्विताम् ।

हरसिद्धामहं वन्दे शत्रुसंहारकारिणीम् ॥ ४॥

पद्मपुष्पधरां गौरीं महासिंहोपरिस्थिताम् ।

स्वाङ्के स्कन्दधरां वन्दे शर्वाणीं स्कन्दमातरम् ॥ ५॥

कात्यायनीमहादेवीं शार्दूलोपरिसंस्थिताम् ।

महाखड्गधरां वन्दे चारुनेत्रत्रयान्विताम् ॥ ६॥

कृष्णां दिगम्बरीं वन्दे गर्दभोपरिसंस्थिताम् ।

चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च कालरात्रीं भयङ्करीम् ॥ ७॥

वृषारूढां महागौरीं त्रिशूलाभयधारिणीम् ।

कटाक्षविशिखोपेतां वन्दे कल्याणकारिणीम् ॥ ८॥

सिद्धिदात्रीं त्रिनेत्रां च पद्मस्थां किरीटोज्ज्वलाम् ।

शङ्खचक्रगदापद्मधरां वन्दे यशस्विनीम् ॥ ९॥

प्रभु प्रार्थना

हे प्रभु आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिये

शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये

हे प्रभु...

लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें

ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें

हे प्रभु...

निंदा किसीकी हम किसीसे भूल कर भी न करें

ईर्ष्या कभी भी हम किसीसे भूल कर भी न करें

हे प्रभु ....

सत्य बोलें झूठ त्यागें मेल आपस में करें

दिव्य जीवन हो हमारा यश तेरा गाया करें

हे प्रभु ....

जाये हमारी आयु हे प्रभु ! लोक के उपकार में

हाथ ड़ालें हम कभी न भूलकर अपकार में

हे प्रभु ....

कीजिये हम पर कृपा ऐसी हे परमात्मा

मोह मद मत्सर रहित होवे हमारी आत्मा

हे प्रभु ....

प्रेम से हम गुरुजनों की नित्य ही सेवा करें

प्रेम से हम संस्कृति की नित्य ही सेवा करें

हे प्रभु...

योगविद्या ब्रह्मविद्या हो अधिक प्यारी हमें

ब्रह्मनिष्ठा प्राप्त करके सर्वहितकारी बनें

हे प्रभु...

सर्वविधदेवानां स्तोत्रसङ्ग्रहः

प्रभाते करदर्शनम् ।

कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती ।

करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ॥

भगवद्भक्तस्मरणम् ।

प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक-

व्यासाऽम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान् ।

रुक्माङ्गदाऽर्जुनवसिष्ठविभीषणादीन्

पुण्यानिमान् परमभागवतान् स्मरामि ॥

पिप्पलस्तुतिः ।

अश्वत्थ हुतभुग्वास गोविन्दस्य गदाप्रिय ।

अशेषं हर मे पापं वृक्षराज! नमोऽस्तु ते ॥ १॥

मूले ब्रह्मा त्वचि विष्णुः शाखायां शङ्कर एव च ।

पत्रे पत्रे सर्वदेवा वासुदेवाय ते नमः ॥ २॥

गरुडस्तुतिः ।

श्रीविष्णुवाहनं प्रणमामि भवत्या सर्पाशनं दुःखहरं खगेशम् ।

मनोहरे वासुसमानवेगं छन्दोमयं ज्ञानधनं प्रशान्तम् ॥ १॥

विष्णुपुत्राय शान्ताय बलबुद्धियुताय च ।

पक्षीन्द्रायाऽतिवेगाय गरुडाय नमो नमः ॥ २॥

दीपस्तुतिः ।

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः ।

दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीप ! नमोऽस्तुते ॥ १॥

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदाम् ।

मम बुद्धिप्रकाशं च दीपज्योति ! नमोऽस्तु ते ॥ २॥

शुभं भवतु कल्याणमारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।

आत्मतत्त्वप्रबोधाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥ ३॥

तुलसीस्तुतिः ।

देवैस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चिताऽसि मुनीश्वरैः ।

नमो नमस्ते तुलसि! पापं हर हरिप्रिये ॥ १॥

यन्मूले सर्वतीर्थानि यन्मध्ये सर्वदेवताः ।

यदग्रे सर्ववेदाश्च तुलसि! त्वां नमाम्यहम् ॥ २॥

हनुमत्स्तुतिः ।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ १॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं य शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।

आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ २॥

कुबेरस्तुतिः ।

धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने ।

नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने ॥

शङ्खस्तुतिः ।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ।

निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोऽस्तुते ॥

दत्तात्रेयस्तुतिः ।

पीताम्बरालङ्कृतपृष्ठभागं भस्मावगुण्ठाऽखिलरुक्मदेहम् ।

विद्युत्सदापिङ्गजटाभिरामं श्रीदत्तयागीशमहंनतोऽस्मि ॥ १॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं

द्वन्द्वातीतं गगनसदृशंतत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं

भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ २॥

भगवत्स्तुतिः ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ १॥

पिता माता गुरुर्भ्राता सखा बन्धुस्त्वमेव मे ।

विद्या सत्कर्म वित्तं च पुरस्पृष्ठे च पार्श्वयोः ॥ २॥

नवनागस्तुतिः ।

अनन्तं वासुकिं शेषंपद्मनाभं च कम्बलम् ।

शङ्खपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा ॥ १॥

एतानि नवनामानि नागानां च महात्मनाम् ।

सायङ्काले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः ।

तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ २॥

मुकुन्दस्तुतिः ।

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।

वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥

अन्नपूर्णास्तुतिः ।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।

ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥

शीतलास्तुतिः ।

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।

शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥ १॥

वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम् ।

मार्जनींकलशोपेतां शूर्पालङ्कृतमस्तकाम् ॥ २॥

वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ।

यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥ ३॥

लेखनीस्तुतिः ।

कृष्णानने द्विजह्वे च चित्रगुप्तकरस्थिते ।

सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ॥

कालीस्तुतिः ।

काली काली महाकाली कालिके परमेश्वरी ।

सर्वानन्दकरे देवि नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥

महाकालीस्तुतिः ।

या कालिका रोगाहरा सुवन्द्या वैश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः ।

जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री ॥

महालक्ष्मीस्तुतिः ।

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां

तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम् ।

बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधाना-

माद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम् ॥ १॥

सुराःऽसुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तव पादपङ्कजम् ।

परावरं पातु वरं सुमङ्गलं नमामि भक्त्या तव कामसिद्धये ॥ २॥

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनि ।

सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते ॥ ३॥

महासरस्वतीस्तुतिः ।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं

वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।

हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां

वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ १॥

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता

या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।

या ब्रह्माऽच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता

सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥ २॥

वीणाधरे विपुल मङ्गलदानशीले

कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे

विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥ ३॥

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।

सर्वया सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥ ४॥

जन्मभूमिदर्शनफलम् ।

कपिलागोसहस्रं च यो ददाति दिनेदिने ।

तत्फलं समवाप्नोति जन्मभूमेः प्रदर्शनात् ॥ १॥

जन्मान्तरसहस्रेण यत्पापं समुपार्जितम् ।

तत्सर्वं नाशमाप्नोति जन्मभूमेः प्रदर्शनात् ॥ २॥

पुत्रार्थी लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।

मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति जन्मभूमेः प्रदर्शनात् ॥ ३॥

भैरवस्तुतिः ।

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-

स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ।

क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु-

र्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

पाण्डुरङ्गस्तुतिः ।

समचरणसरोजं सान्द्रनीलाम्बुदाभं

जघननिहितपाणिं मण्डनं मण्डनानाम् ।

तरुणतुलसिमालाकन्धरं कञ्जनेत्रं

सदयधवलहासं विठ्ठलं चिन्तयामि ॥

रामचन्द्रस्तुतिः ।

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं

पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्द्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।

वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं

नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ॥ १॥

कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानां

पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परमपदप्राप्तये प्रस्थितस्य ।

विश्रामस्थामेकं कविवरवचसां जीवनं सज्जनानां

बीजं धर्मद्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम ॥ २॥

राज्यं येन पटान्तलग्नतृणवत्त्यक्तं गुरोराज्ञया

पाथेयं परिगृह्य कार्मुकवरं घोर वनं प्रस्थितः ।

स्वाधीनः शशिमौलिचापविजये प्राप्तो न वै विक्रियां

पायाद् वः स विभीषणाग्रजनिहा रामाभिधानो हरिः ॥ ३॥

कृष्णस्तुतिः ।

श्रियाश्लिष्टो विष्णुः स्थिरचरगुरुर्वेदविषयो

धियां साक्षी शुद्धो हरिरसुरहन्ताब्जनयनः ।

गदी शङ्खी चक्री विमलवनमाली स्थिररुचिः

शरण्यो लोकेशो मम भवतु कृष्णोऽक्षि विषयः ॥

विष्णुस्तुतिः ।

यं शैवाःसमुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो

बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः ।

अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः

सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥ १॥

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-

र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।

ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो

यस्याऽन्तं न विदुः सुराऽसुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥ २॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं

विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं

वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ ३॥

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।

सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥ ४॥

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।

सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥ ५॥

इति विष्णुस्तुतिः समाप्ता ।

शिवस्तुतिः ।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।

सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥ १॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे

सुरतरुवरशाखालेखनीपत्रमूर्वी ।

लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं

तदपि तव गुणानामीशपारं नयाति ॥ २॥

वन्दे देवमुमापतिं सुरुगुरुं वन्दे जगत्कारणं

वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।

वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं

वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ ३॥

स्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-

श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।

अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं

तथाऽपि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ ४॥

निरावलम्बस्य ममाऽवलम्बं विपाटिताशेषविपत्कदम्बम् ।

मदीयपापाचलपातशम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बं बम् ॥ ५॥

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः ।

त्राहि मां पार्वतीनाथ! सर्वपापहरो भव ॥ ६॥

इति शिवस्तुतिः समाप्ता ।

सत्यरूपस्तुतिः ।

सत्यरूपं सत्यसन्धं सत्यनारायणं हरिणे

यत्सत्यत्वेन जगतस्तं सत्यं त्वां नमाम्यहम् ॥ १॥

त्रैलोक्यचैतन्यमयादिदेव! श्रीनाथ! विष्णो! भवदाज्ञया वै

प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥ २॥

दुःस्वप्ननाशनसूर्यस्तुतिः ।

आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः ।

तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः ॥ १॥

पञ्चमं च सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः ।

सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः ॥ २॥

नवमं दिनकृत् प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः ।

एकादशं त्रयीमूर्तिर्द्वादशं सूर्य एव च ॥ ३॥

द्वादशैतानि नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः ।

दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥ ४॥

दुःस्वप्ननाशनदेवस्मरणम् ।

अविमुक्तचरणयुगलं दक्षिणमूर्तेश्च कुक्कुटचतुष्कम् ।

स्मरणं वाराणस्यां निहन्ति स्वप्नमशकुनं च ॥

सप्तचिरञ्जीविस्तुतिः ।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः ।

कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥ १॥

सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् ।

जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः ॥ २॥

पुण्यजनस्तुतिः ।

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः ।

पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ॥

हकारादिपञ्चदेवस्तुतिः ।

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम् ।

पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसङ्कटनाशनम् ॥

पञ्चदेवीस्तुतिः ।

उमा उषा च वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम् ।

प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्द्धते सदा ॥

पञ्चकन्यास्तुतिः ।

अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा ।

पञ्चकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ॥

सप्तर्षिस्मरणम् ।

कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गोतमः ।

जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः ॥ १॥

तेषां वंशानुवंशानां वेदमन्त्रस्य द्रष्टृणाम् ।

संस्मरामि सदा चैव भक्त्या धर्ममार्गप्रदर्शकान् ।

सप्तपुरीस्तुतिः ।

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका ।

पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

राजर्षिस्तुतिः ।

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च ।

ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ॥

अनिरुद्धादिदेवस्तुतिः ।

अनिरुद्धं राजं ग्राहं वासुदेवं महाद्युतिम् ।

सङ्कर्षणं महात्मानं प्रद्युम्नं च तथैव च ॥ १॥

मत्स्यं कूर्मं च वाराहं वामनं तार्क्ष्यमेव च ।

नारसिंहं च नागेन्द्रं सृष्टिसंहारकारकम् ॥ २॥

विश्वरूपं हृषीकेशं गोविन्दं मधुसूदनम् ।

त्रिदशैर्वन्दितं देवं दृढभक्तिमनूपमम् ॥ ३॥

एतानि प्रातरुत्थाय संस्मरिष्यन्ति ये नराः ।

सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते स्वर्गलोकमवाप्नुयुः ॥ ४॥

प्रातर्वन्दनीयस्तुतिः ।

प्रातःकाले पिता माता ज्येष्ठभ्राता तथैव च ।

आचार्याः स्थविराश्चैव वन्दनीया दिने दिने ॥

प्रातर्दर्शनम् ।

कपिलां दर्पणं धेनुं भाग्यवन्तं च भूपतिम् ।

आचार्यं अन्नदातारं प्रातः पश्येद् बुधो जनः ॥ १॥

श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितिं तथा ।

प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स विमुच्यते ॥ २॥

पृथ्वीस्तुतिः ।

स्वर्गैकोभिरदोनिवासिपुरुषारब्धातिशुद्धाध्वर-

स्वाहाकारवषट्क्रियोत्थममृतं स्वादीय आदीयते ।

आम्नायप्रवणैरलङ्कृतजुषेऽमुष्मै मनुष्यैः शुभै-

र्दिव्यक्षेत्रसरित्पवित्रवपुषे देव्यै पृथिव्यै नमः ॥ १॥

समुदवसने देवि! पर्वतस्तनमण्डले ।

विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ २॥

दन्तधावनस्तुतिः ।

आयुर्बल यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ।

ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते! ॥

कुम्भस्तुतिः ।

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ।

उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ १॥

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ २॥

शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥ ३॥

षोडशमातृकास्तुतिः ।

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ १॥
जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ २॥

नवदुर्गानामस्तोत्रम् ।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ १॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रिश्चमहागौरीति चाष्टमम् ॥ २॥
नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः ।

शैलपुत्रीस्तुतिः ।

जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
सर्वात्मिकेशि! कौमारि! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥

ब्रह्मचारिणीस्तुतिः ।

त्रिपुरां त्रिगुणाधारां मार्गज्ञानस्वरूपिणीम् ।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं प्रणमाम्यहम् ॥

चन्द्रघण्टास्तुतिः ।

कालिकां तु कलातीतां कल्याणहृदयां शिवाम् ।
कल्याणजननीं नित्यं कल्याणीं प्रणमाम्यहम् ॥

कूष्माण्डास्तुतिः ।

अणिमादिगुणौदारां मकराकारचक्षुषम् ।
अनन्तशक्तिभेदां तां कामाक्षीं प्रणमाम्यहम् ॥

स्कन्दमातास्तुतिः ।

चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम् ।
तां नमामि च देवेशीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥

कात्यायनीस्तुतिः ।

सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवैर्नमस्कृताम् ।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं प्रणमाम्यहम् ॥

कालरात्रिस्तुतिः ।

चण्डवीरां चण्डमायां रक्तबीजप्रभञ्जनीम् ।
तां नमामि च देवेशीं गायत्रीं गुणशालिनीम् ॥

महागौरीस्तुतिः ।

सुन्दरीं स्वर्णसर्वाङ्गीं सुखसौभाग्यदायिनीम् ।
सन्तोषजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥

सिद्धिदास्तुतिः ।

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भयदुर्गविनाशिनि ।
प्रणमामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥

सिद्धिलक्ष्मीस्तुतिः ।

आकारब्रह्मरूपेण ओङ्कारं विष्णुमव्ययम् ।
सिद्धिलक्ष्मि! परालक्ष्मि! लक्ष्यलक्ष्मि! नमोऽस्तु ते ॥ १॥
या श्रीःपद्मवने कदम्बशिखरे राजगृहे कुञ्जरे
श्वेते चाऽश्वयुते वृषे च युगले यज्ञे च यूपस्थिते ।
शङ्खे देवकुले नरेन्द्रभवने गङ्गातटे गोकुले
या श्रीस्तिष्ठति सर्वदा मम गृहे भूयात् सदा निश्चला ॥ २॥
या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुद्धवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भै-
र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥ ३॥

शनिस्तुतिः ।

कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः ।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रयसंस्थितः ॥ १॥
एतानि शनिनामानि जपेदश्वत्थसन्निधौ ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाऽपि भविष्यति ॥ २॥

शनिपत्नीनामस्तुतिः ।

ध्वजिनी धामनी चैव कङ्काली कलहप्रिया ।
कण्टकी कलही चाऽथ तुरङ्गी महिषी अजा ॥ १॥
शनेर्नामानि पत्नीनामेतानि सञ्जपन् पुमान् ।

दुःखानि नाशयेन्नित्यं सौभाग्यमेधते सुखम् ॥ २॥

ग्रहस्तुतिः ।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।

गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

गङ्गास्तुतिः ।

शैलेन्द्रादवतारिणी निजजले मज्जज्जनात्तारिणी

पारावारविहारिणी भवभयश्रेणीसमुत्सारिणी ।

शेषाहेरनुकारिणी हरशिरोवल्लोदलाकारिणी

काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गङ्गामनोहारिणी ॥

यमुनास्तुतिः ।

अयि मधुरे मधुमोदविलासिनि शैलविहारिणि वेगभरे

परिजत्पालिनि दुष्टनिषूदिनि वाञ्छितकामविलासधरे ।

व्रजपुरवासिजनार्दितपातकहारिणि विश्वजनोद्धरिके

जय यमुने जय भीतिनिवारिणिसङ्कटनाशिनि पावय माम् ॥

मालास्तुतिः ।

महामाये महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि! ।

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १॥

अविघ्नं कुरु माले ! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।

जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये ॥ २॥

इन्द्रस्तुतिः ।

ऐरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः ।

शतयज्ञाभिधो देवस्तस्मादिन्द्राय ते नमः ॥

शशाङ्कस्तुतिः ।

ज्योत्स्नानां पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः ।

नमस्ते रोहिणीकान्त! सुधावास! नमोऽस्तु ते ॥ १॥

नमो मण्डलदीपाय शिरोरत्नाय धूर्जटेः ।

कलाभिर्वर्द्धमानाय नभश्चन्द्राय चारवे ॥ २॥

नवग्रहाः- रविस्तुतिः ।

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः ।

विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः ॥

चन्द्रस्तुतिः ।

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः ।

विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे विधुः ॥

कुजस्तुतिः ।

भूमिपुत्रो महातेजा जगतोभयकृत्सदा ।

वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां दहतु मे कुजः ॥

बुधस्तुतिः ।

उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः

सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः ॥

गुरुस्तुतिः ।

देवमन्त्री विशालाक्षो सदा लोकहिते रतः ।

अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः ॥

भृगुस्तुतिः ।

दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्रणवश्च महाद्युतिः ।

प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां दहतु मे भृगुः ॥

शनिस्तुतिः ।

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः ।

मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः ॥

राहुस्तुतिः ।

महाशीर्षो महावक्त्रो महादंष्ट्रो महायशाः ।

अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां दहतु मे तमः ॥

केतुस्तुतिः ।

अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः ।

उत्पातरूपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिखी ॥

सार्धश्लोकी दुर्गा ।

मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् ।

शक्रादिस्तुतिकं चैव दूतसंवाद एव च ॥ १॥

शुम्भराजवधश्चैव नारायणकृतस्तुतिः ।

सार्धपाठमिदं प्रोक्तं नवपाठफलप्रदम् ॥ २॥

अर्धश्लोकीभागवतम् ।

श्लोकार्धे तथा प्रोक्तं भगवत्याऽखिलार्थदम्।

सर्वं खल्विदमेवाऽहं नाऽन्यदस्ति सनातनम्॥

अनन्तस्तुतिः।

अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव!।

अनन्तरूपे विनियोजयस्व अनन्तसूत्राय नमो नमस्ते॥

दशमहाविद्यानामानि।

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।

भैरवी छिन्नमस्तां च विद्या धूमावती तथा॥ १॥

बगला सिद्धिविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।

एता दशमहाविद्याः सिद्धिविद्याः प्रकीर्तिताः॥ २॥

कालीस्तुतिः।

रक्ताऽब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्।

शूलं करालं दधतीं कराऽब्जै रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्॥

तारास्तुतिः।

मातर्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्यसम्पत्प्रदे

प्रत्यालीढपदस्थिते शवहृदि स्मेराननाम्भोरुहे।

फुल्लेन्दीवरलोचने त्रिनयने कर्त्री कपालोत्पले

खड्गञ्चादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये॥ १॥

वाचामीश्वरि भक्तकल्पलतिके सर्वार्थसिद्धीश्वरि!

गद्यप्राकृतपद्यजातरचनासर्वार्थसिद्धिप्रदे!।

नीलेन्दीवरलोचनत्रययुते कारुण्यवारान्निधे!

सौभाग्यामृतवर्द्धनेन कृपया सिञ्चत्वमस्मादृशम्॥ २॥

षोडशीस्तुतिः।

बालव्यक्तविभाकरामितनिभां भव्यप्रदां भारतीं

ईषत्फुल्लमुखाम्बुजस्मितकरैराशाभवान्धापहाम्।

पाशं साभयमङ्कुशं च वरदं संविभ्रतीं भूतिदा

भ्राजन्तीं चतुरम्बुजाकृतिकरैर्भक्त्या भजे षोडशीम्॥ १॥

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।

पाशाऽङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे॥ २॥

भुवनेश्वरीस्तुतिः।

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।

स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्॥ १॥

जगज्जनानन्दकरीं जयाख्यां यशस्विनीं यन्त्रसुयज्ञयोनिम्।

जितामितामित्रकृतप्रपञ्चां भजामहे श्रीभुवनेश्वरी ताम्॥ २॥

हरौ प्रसुप्ते भुवनत्रयान्ते अवातरन्नाभिजपद्मजन्मा।

विधिस्ततोऽन्धे विदधारयत्पदं भजामहे श्रीभुवनेश्वरीं ताम्॥ ३॥

छिन्नमस्तास्तुतिः।

नाभौ शुद्धसरोजवक्त्रविलसद्बन्धूकपुष्पारुणं

भास्वद्भास्करमण्डलं तदुदरे तद्योनिचक्रं महत्।

तन्मध्ये विपरीतमैथुनरतप्रद्युम्नसत्कामिनी-

पृष्ठस्थां तरुणार्ककोटिविलसत्तेजःस्वरूपां भजे॥

त्रिपुरभैरवीस्तुतिः।

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां

रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।

हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं

देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम्॥

धूमावतीस्तुतिः।

प्रातर्या स्यात् कुमारो कुसुमकलिकया जापमाला जपन्ती

मध्याह्ने प्रौढरूपाविकसितवदना चारुनेत्रा निशायां।

सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां वहन्ती

सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिका पातु युष्मान्॥

बगलास्तुतिः।

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेद्यां

सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।

पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं

देवीं स्मरामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्॥ १॥

चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगण्डस्थलां

लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम्।

गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वा चलां

स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनःस्तम्भिनीम्॥ २॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।

गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्वराढ्यां द्विभुजां नमामि॥ ३॥

प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः पठेत् सुभक्त्या परिचिन्त्य पीताम्।

द्रुतं भवेत् तस्य समस्तवृद्धिर्विनाशमायाति च तस्य शत्रुः॥ ४॥

मातङ्गीस्तुतिः।

श्यामां शुभ्रांशुभालां त्रिकमलनयनां रत्नसिंहासनस्थां

भक्ताभीष्टप्रदात्रीं सुरनिकरकरासेव्यकञ्जाङ्घ्रियुग्माम्।

नीलाम्भोजांशुकान्तिं निशिचरनिकरारण्यदावाग्निरूपां

पाशं खड्गं चतुर्भिर्वरकमलकरैः खेटकं चाङ्कुशं च॥ १॥

नमस्ते मातङ्ग्यै मृदुमुदिततन्वै तनुमतां

परश्रेयोदायै कमलचरणध्यानमनसाम्।

सदा संसेव्यायै सदसि विबुधैर्दिव्यधिषणै-

र्दयाद्रायै देव्यै दुरितदलनोद्दण्डमनसे॥ २॥

कमलात्मिकास्तुतिः।

ध्यानम् – कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-

र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयाऽमृतघटैरासिच्यमानां श्रियम्।

बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां

क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

स्तुतिः –त्रैलोक्यपूजिते देवि! कमले विष्णुवल्लभे!।

यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥ १॥

ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया।

पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः श्रीपद्मधारिणी॥ २॥

द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्।

स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत् तस्यपुत्रदारादिभिः सह॥ ३॥

इति श्रीकमलात्मिकास्तुतिः समाप्ता।

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९५३ सौम्यायनं याम्यगोल: वसन्तर्त्तु: चैत्र शुक्लपक्ष: दिनांक:- १३.०४.२०२१ से २७.०४.२०२१ तक															
अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:			नक्षत्रान्त:			योगान्त:			करणान्त:			योग	सू. उ.	सू. अ.
13	मं	१	०८	३९	अश्विनी	१२	५४	विष्कुम्भ	१४	०५	वव	०७	३९	अमृत	०५:३५	०६:२५
14	बु	२	१०	३९	भरणी	१५	३०	प्रीति	१४	३८	कौ	१२	४३	काण	०५:३४	०६:२६
15	गु	३	१२	४५	कृत्तिका	१८	०८	आयुष्यमान्	१५	१७	गर	१७	५७	लुम्बक	०५:३४	०६:२६
16	शु	४	१४	४३	रोहिणी	२०	३२	सौभाग्य	१५	४८	भ	२२	५४	मित्र	०५:३३	०६:२७
17	श	५	१६	२५	मृगशिरा	२२	४८	शोभन	१६	०८	वा	२७	१३	वज्र	०५:३२	०६:२८
18	र	६	१७	४६	आर्द्रा	२४	३७	अतिगण्ड	१६	११	तै	३०	३४	ध्वांक्ष	०५:३२	०६:२८
19	चं	७	१८	३८	पुनर्वसु	२५	५९	सुकर्मा	१५	५२	गर	०१	४१	धूम्र	०५:३१	०६:२९
20	मं	८	१९	००	पुष्य	२६	४९	धृति	१५	०९	भ	०३	१७	प्रवर्धमान	०५:३०	०६:३०
21	बु	९	१८	५१	श्लेषा	२७	१०	शूल	१४	०३	वा	०३	३४	राक्षस	०५:३०	०६:३०
22	गु	१०	१८	११	मघा	२७	०३	गण्ड	१२	३२	तै	०२	३४	मुसल	०५:२९	०६:३१
23	शु	११	१७	०४	पू. फा.	२६	२७	वृद्धि	१०	३८	व	००	२४	सिद्धि	०५:२८	०६:३२
24	श	१२	१५	३४	उ. फा.	२५	३४	ध्रुव	०८	२६	वा	२५	१६	उत्पात	०५:२८	०६:३२
25	र	१३	१३	४३	हस्त	२४	२१	व्याघात हर्षण	०५ २७	५६ १३	तै	२०	४१	मानस	०५:२७	०६:३३
26	चं	१४	११	३७	चित्रा	२२	५३	वज्र	२४	१७	व	१५	२७	मुद्गर	०५:२६	०६:३४
27	मं	१५	०९	१९	स्वाती	२१	१८	सिद्धि	२१	१६	वव	०९	४३	ध्वज	०५:२६	०६:३४

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं याम्यगोल: वसन्तर्त्तु: वैशाख कृष्णपक्ष: दिनांक:- २८.०४.२०२१ से ११.०५.२०२१ तक																
अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:			नक्षत्रान्त:			योगान्त:			करणान्त:			योग:	सू. उ.	सू. अ.
28	बु	१ २	०६ २८	५३ २७	विशाखा	१९	३७	व्यतिपात	१८	१०	कौ	०३	४१	धाता	०५:२५	०६:३५
29	गु	३	२६	०२	अनुराधा	१७	५७	वरीयान	१५	०५	व	२४	३४	आनन्द	०५:२४	०६:३६
30	शु	४	२३	४५	ज्येष्ठा	१६	२५	परिध	१२	०६	वव	१८	४४	चर	०५:२४	०६:३६
01 मई	श	५	२१	४१	मूल	१५	०१	शिव	०९	१३	कौ	१३	१९	गद	०५:२३	०६:३७
02	र	६	१९	५३	पू. षा.	१३	५४	सिद्ध साध्य	०६ २८	३२ ०८	गर	०८	३१	शुभ	०५:२२	०६:३८
03	चं	७	१८	२६	उ. षा.	१३	०९	शुभ	२६	०१	भ	०४	२९	मृत्यु	०५:२२	०६:३८
04	मं	८	१७	२३	श्रवण	१२	४४	शुक्ल	२४	१४	वा	०१	२४	लुम्बक	०५:२१	०६:३९
05	बु	९	१६	५०	धनिष्ठा	१२	४७	ब्रह्म	२२	५१	गर	२८	४२	मित्र	०५:२१	०६:३९
06	गु	१०	१६	४५	शतभिषा	१३	१९	ऐन्द्र	२१	५०	भ	२८	३३	वज्र	०५:२०	०६:४०
07	शु	११	१७	१३	पू.भा.	१४	२२	वैधृति	२१	१६	वा	२९	४५	ध्वांक्ष	०५:१९	०६:४१
08	श	१२	१८	१०	उ.भा.	१५	५५	विष्कुम्भ	२१	०२	कौ	००	५६	धूम्र	०५:१९	०६:४१
09	र	१३	१९	३४	रेवती	१७	५४	प्रीति	२१	१०	गर	०३	५४	प्रवर्धमान	०५:१८	०६:४२
10	चं	१४	२१	२०	अश्विनी	२०	१३	आयुष्यमान	२१	३६	भ	०७	५२	राक्षस	०५:१८	०६:४२
11	मं	३०	२३	१९	भरणी	२२	४६	सौभाग्य	२२	११	च	१२	३४	मुसल	०५:१७	०६:४३

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं सौम्यगोल: वसन्तर्त्तु: वैशाख शुक्लपक्ष: दिनांक:- १२.०५.२०२१ से २६.०५.२०२१ तक															
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्त:**			**नक्षत्रान्त:**			**योगान्त:**			**करणान्त:**			**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**
12	बु	१	२५	२३	कृत्तिका	२५	२५	शोभन	२२	५१	किं	१७	४०	सिद्धि	०५:१७	०६:४३
13	गु	२	२७	१८	रोहिणी	२७	५६	अतिगण्ड	२३	२६	वा	२२	४०	उत्पात	०५:१६	०६:४४
14	शु	३	२९	००	मृगशिरा	समस्त		सुकर्मा	२३	५१	तै	२७	१३	मानस	०५:१६	०६:४४
15	श	४	समस्त		मृगशिरा	०६	१२	धृति	२३	५९	व	३०	५९	वज्र	०५:१५	०६:४५
16	र	४	०६	१८	आर्द्रा	०८	०६	शूल	२३	४६	भ	०२	३८	ध्वांक्ष	०५:१५	०६:४५
17	चं	५	०७	०९	पुनर्वसु	०९	३४	गण्ड	२३	११	वा	०४	४८	धूम्र	०५:१४	०६:४६
18	मं	६	०७	३०	पुष्य	१०	३३	वृद्धि	२२	१२	तै	०५	४१	प्रवर्धमान	०५:१४	०६:४६
19	बु	७	०७	१९	श्लेषा	१०	५९	ध्रुव	२०	४७	व	०५	१६	राक्षस	०५:१३	०६:४७
20	गु	८	०६	४०	मघा	१०	५७	व्याघात	१९	०१	वव	०३	३७	मुसल	०५:१३	०६:४७
21	शु	९ १०	०५ २८	३१ ००	पू.फा.	१०	२८	हर्षण	१६	५३	कौ	००	४८	सिद्धि	०५:१२	०६:४८
22	श	११	२६	०९	उ.फा.	०९	४०	वज्र	१४	२९	व	२४	४२	उत्पात	०५:१२	०६:४८
23	र	१२	२४	०१	हस्त	०८	२९	सिद्धि	११	४९	वव	१९	४४	मानस	०५:११	०६:४९
24	चं	१३	२१	४२	चित्रा	०७	०५	व्यतिपात	०८	०७	कौ	१४	१२	मुद्गर	०५:११	०६:४९
25	मं	१४	१९	१७	स्वाती विशाखा	०५ २७	३१ ५२	वरीयान परिध	०५ २६	५९ ५६	गर	०८	१६	ध्वज	०५:११	०६:४९
26	बु	१५	१६	४८	अनुराधा	२६	१२	शिव	२४	००	भ	०२	१०	सौम्य	०५:१०	०६:५०

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं सौम्यगोल: ग्रीष्मर्त्तु: ज्येष्ठ कृष्णपक्ष: दिनांक:- २७.०५.२०२१ से १०.०६.२०२१ तक

अं. ता.	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू. उ.	सू. अ.
27	गु	१	१४:२२	ज्येष्ठा	२४:३७	सिद्ध	२०:५२	कौ	२५:४९	कालदण्ड	०५:१०	०६:५०
28	शु	२	१२:०३	मूल	२३:१२	साध्य	१७:५९	गर	१७:१४	सुस्थिर	०५:०९	०६:५१
29	श	३	०९:५७	पू.षा.	२२:०१	शुभ	१५:१७	भ	११:४९	मातंग	०५:०९	०६:५१
30	र	४	०८:०७	उ.षा.	२१:१२	शुक्ल	१२:५१	वा	०७:२६	अमृत	०५:०९	०६:५१
31	चं	५	०६:३८	श्रवण	२०:४२	ब्रह्म	१०:४१	तै	०३:४४	सिद्धि	०५:०८	०६:५२
01 जून	मं	६ ७	०५:३२ २८:५६	धनिष्ठा	२०:३९	ऐन्द्र	०८:५२	व	०१:०१	उत्पात	०५:०८	०६:५२
02	बु	८	२८:४९	शतभिष	२१:०४	वैधृति	०७:२५	वा	२९:२२	मानस	०५:०८	०६:५२
03	गु	९	समस्त	पू.भा.	२२:०१	विष्कुम्भ	०६:२१	तै	२९:४५	मुद्गर	०५:०७	०६:५३
04	शु	९	०५:१३	उ.भा.	२३:२८	प्रीति	०५:४४	गर	००:१६	ध्वज	०५:०७	०६:५३
05	श	१०	०६:०७	रेवती	२५:२२	आयुष्यमान	०५:२९	भ	०२:३१	धाता	०५:०७	०६:५३
06	र	११	०७:२९	अश्विनी	२७:३८	सौभाग्य	०५:३५	वा	०५:५६	आनन्द	०५:०७	०६:५३
07	चं	१२	०९:११	भरणी	समस्त	शोभन	०५:५८	तै	१०:१३	चर	०५:०६	०६:५४
08	मं	१३	११:०९	भरणी	०६:०८	अतिगण्ड	०६:३४	व	१५:०७	मुसल	०५:०६	०६:५४
09	बु	१४	१३:११	कृत्तिका	०८:४६	सुकर्मा	०७:१४	श	२०:१३	सिद्धि	०५:०६	०६:५४
10	गु	३०	१५:०८	रोहिणी	११:२०	धृति	०७:५२	नाग	२५:०६	उत्पात	०५:०६	०६:५४

श्रीसंवत् २०७८ शकः १९४३ सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मर्त्तुः ज्येष्ठ शुक्लपक्षः दिनांकः- ११.०६.२०२१ से २४.०६.२०२१ तक

अं. ता.	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू. उ.	सू. अ.
11	शु	१	१६:४९	मृगशिरा	१३:४०	शूल	०८:२०	वव	२९:१७	मानस	०५:०६	०६:५४
12	श	२	१८:०७	आर्द्रा	१५:३९	गण्ड	०८:३१	वा	००:५६	मुद्गर	०५:०५	०६:५५
13	र	३	१८:५९	पुनर्वसु	१७:१२	वृद्धि	०८:२३	तै	०३:४४	ध्वज	०५:०५	०६:५५
14	चं	४	१९:२०	पुष्य	१८:१७	ध्रुव	०७:५४	व	०५:११	धाता	०५:०५	०६:५५
15	मं	५	१९:११	श्लेषा	१८:५१	व्याघात	०७:००	वव	०५:२६	आनन्द	०५:०५	०६:५५
16	बु	६	१८:३१	मघा	१८:५५	हर्षण वज्र	०५:४२ २८:००	कौ	०४:२५	चर	०५:०५	०६:५५
17	गु	७	१७:२४	पू.फा.	१८:३२	सिद्धि	२५:५७	गर	०२:१२	गद	०५:०५	०६:५५
18	शु	८	१५:५३	उ.फा.	१७:४७	व्यतिपात	२३:३७	वव	२७:००	शुभ	०५:०५	०६:५५
19	श	९	१४:०१	हस्त	१६:४१	वरीयान	२१:०१	कौ	२२:२१	मृत्यु	०५:०५	०६:५५
20	र	१०	११:५४	चित्रा	१५:१९	परिध	१८:१२	गर	१७:०२	पद्म	०५:०५	०६:५५
21	चं	११	०९:३४	स्वाती	१३:४६	शिव	१५:१५	भ	११:१३	छत्र	०५:०५	०६:५५
22	मं	१२ १३	०७:०८ २८:३९	विशाखा	१२:०८	सिद्ध	१२:१३	वा	०५:०७	श्रीवत्स	०५:०५	०६:५५
23	बु	१४	२६:१२	अनुराधा	१०:२७	साध्य	०९:०९	गर	२५:५१	सौम्य	०५:०५	०६:५५
24	गु	१५	२३:५३	ज्येष्ठा	०८:५१	शुभ शुक्ल	०६:०९ २७:१६	भ	१९:५४	कालदण्ड	०५:०५	०६:५५

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं सौम्यगोल: ग्रीष्मर्त्तु: आषाढ कृष्णपक्ष: दिनांक:- २५.०६.२०२१ से १०.०७.२०२१ तक												
अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
25	शु	१	२१:४५	मूल	०७:२३	ब्रह्म	२४:३३	वा	१४:२०	सुस्थिर	०५:०५	०६:५५
26	श	२	१९:५३	पू.षा.	०६:०९	ऐन्द्र	२२:०३	तै	०९:२०	मातंग	०५:०५	०६:५५
27	र	३	१८:२२	उ.षा. श्रवण	०५:१४ २८:३९	वैधृति	१९:५१	व	०५:०७	अमृत	०५:०५	०६:५५
28	चं	४	१७:१४	धनिष्ठा	२८:२९	विष्कुम्भ	१७:५९	वव	०१:४८	शुभ	०५:०५	०६:५५
29	मं	५	१६:३५	शतभिष	२८:४९	प्रीति	१६:२८	तै	२८:४४	मृत्यु	०५:०५	०६:५५
30	बु	६	१६:२५	पू.भा.	समस्त	आयुष्यमान	१५:२१	व	२८:२०	पद्म	०५:०५	०६:५५
01जुलाई	गु	७	१६:४७	पू.भा.	०५:३७	सौभाग्य	१४:३८	वव	२९:१६	मुद्गर	०५:०५	०६:५५
02	शु	८	१७:३८	उ.भा.	०६:५८	शोभन	१४:१९	वा	००:२०	ध्वज	०५:०५	०६:५५
03	श	९	१८:५८	रेवती	०८:४६	अतिगण्ड	१४:२३	तै	०३:०२	धाता	०५:०६	०६:५४
04	र	१०	२०:३८	अश्विनी	१०:५८	सुकर्मा	१४:३४	व	०६:४६	आनन्द	०५:०६	०६:५४
05	चं	११	२२:३४	भरणी	१३:२६	धृति	१५:१७	वव	११:१६	चर	०५:०६	०६:५४
06	मं	१२	२४:३६	कृत्तिका	१६:०२	शूल	१५:५७	कौ	१६:१३	गद	०५:०६	०६:५४
07	बु	१३	२६:३२	रोहिणी	१८:३७	गण्ड	१६:३५	गर	२१:१०	शुभ	०५:०६	०६:५४
08	गु	१४	२८:१५	मृगशिरा	२१:०१	वृद्धि	१७:०६	भ	२५:४२	मृत्यु	०५:०७	०६:५३
09	शु	३०	समस्त	आर्द्रा	२३:०७	ध्रुव	१७:२२	च	२९:३०	पद्म	०५:०७	०६:५३
10	श	३०	०५:३५	पुनर्वसु	२४:४५	व्याघात	१७:१७	नाग	०१:१०	छत्र	०५:०७	०६:५३

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं सौम्यगोल: ग्रीष्मर्त्तु: आषाढ शुक्लपक्ष: दिनांक:- ११.०७.२०२१ से २४.०७.२०२१ तक													
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्त:**		**नक्षत्रान्त:**		**योगान्त:**		**करणान्त:**		**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**	
11	र	१	०६:२९	पुष्य	२५:५८	हर्षण	१६:५४	वव	०३:२३	श्रीवत्स	०५:०८	०६:५२	
12	चं	२	०६:५३	श्लेषा	२६:३९	वज्र	१६:०४	कौ	०४:२२	सौम्य	०५:०८	०६:५२	
13	मं	३	०६:४५	मघा	२६:५१	सिद्धि	१४:५०	गर	०४:०२	कालदण्ड	०५:०८	०६:५२	
14	बु	४ ५	०६:०७ २९:०१	पू.फा.	२६:३३	व्यतिपात	१३:१२	भ	०२:२८	सुस्थिर	०५:०८	०६:५२	
15	गु	६	२७:३३	उ.फा.	२५:५२	वरीयान	११:१४	कौ	२७:५१	मातंग	०५:०९	०६:५१	
16	शु	७	२५:४२	हस्त	२४:५२	परिघ	०८:५६	गर	२३:४१	अमृत	०५:०९	०६:५१	
17	श	८	२३:३५	चित्रा	२३:३२	शिव सिद्ध	०६:२२ २७:३५	भ	१८:४४	काण	०५:०९	०६:५१	
18	र	९	२१:१७	स्वाती	२२:०२	साध्य	२४:४०	वा	१३:१२	लुम्बक	०५:१०	०६:५०	
19	चं	१०	१८:५०	विशाखा	२०:२४	शुभ	२१:३९	तै	०७:१४	मित्र	०५:१०	०६:५०	
20	मं	११	१६:२१	अनुराधा	१८:४३	शुक्ल	१८:३५	व	०१:०३	वज्र	०५:११	०६:४९	
21	बु	१२	१३:५५	ज्येष्ठा	१७:०६	ब्रह्म	१५:३५	वा	२१:४९	ध्वांक्ष	०५:११	०६:४९	
22	गु	१३	११:३५	मूल	१५:३७	ऐन्द्र	१२:४०	तै	१५:५७	धुम्र	०५:१२	०६:४८	
23	शु	१४	०९:२६	पू.षा.	१४:१९	वैधृति	०९:५४	व	१०:३६	प्रवर्धमान	०५:१२	०६:४८	
24	श	१५	०७:३३	उ.षा.	१३:१८	विष्कुम्भ प्रीति	०७:२२ २९:०६	वव	०५:५२	राक्षस	०५:१२	०६:४८	

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं सौम्यगोल: वर्षार्त्तु: श्रावणकृष्णपक्ष: दिनांक:- २५.०७.२०२१ से ०८.०८.२०२१ तक												
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्त:**		**नक्षत्रान्त:**		**योगान्त:**		**करणान्त:**		**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**
25	र	१ २	०६:०१ २८:५२	श्रवण	१२:३९	आयुष्मान	२७:१०	कौ	०२:००	गद	०५:१३	०६:४७
26	चं	३	२८:११	धनिष्ठा	१२:२३	सौभाग्य	२५:३३	व	२८:१६	शुभ	०५:१३	०६:४७
27	मं	४	२७:५९	शतभिष	१२:३७	शोभन	२४:२१	वव	२७:०९	मृत्यु	०५:१४	०६:४६
28	बु	५	२८:१९	पू.भा.	१३:१९	अतिगण्ड	२३:३३	कौ	२७:१८	पद्म	०५:१४	०६:४६
29	गु	६	२९:१०	उ.भा.	१४:३३	सुकर्मा	२३:११	गर	२८:४५	छत्र	०५:१५	०६:४५
30	शु	७	समस्त	रेवती	१६:१३	धृति	२३:०७	भ	३१:२३	श्रीवत्स	०५:१५	०६:४५
31	श	७	०६:२८	अश्विनी	१८:२०	शूल	२३:२५	वव	०२:५९	सौम्य	०५:१६	०६:४४
01अग.	र	८	०८:०७	भरणी	२०:४४	गण्ड	२३:५५	कौ	०७:०८	कालदण्ड	०५:१६	०६:४४
02	चं	९	१०:०३	कृत्तिका	२३:२१	वृद्धि	२४:३४	गर	११:५५	सुस्थिर	०५:१७	०६:४३
03	मं	१०	१२:०५	रोहिणी	२५:५७	ध्रुव	२५:१३	भ	१७:००	मातंग	०५:१७	०६:४३
04	बु	११	१४:०४	मृगशिरा	२८:२४	व्याघात	२५:४५	वा	२१:५४	अमृत	०५:१८	०६:४२
05	गु	१२	१५:४८	आर्द्रा	समस्त	हर्षण	२६:०३	तै	२६:१४	काण	०५:१८	०६:४२
06	शु	१३	१७:११	आर्द्रा	०६:३५	वज्र	२६:०३	व	२९:४०	पद्म	०५:१९	०६:४१
07	श	१४	१८:०७	पुनर्वसु	०८:२०	सिद्धि	२५:४३	भ	००:४९	छत्र	०५:२०	०६:४०
08	र	३०	१८:३३	पुष्य	०९:३९	व्यतिपात	२४:५७	च	०२:३०	श्रीवत्स	०५:२०	०६:४०

श्रीसंवत् २०७८ शकः १९४३ याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षार्त्तुः श्रावणशुक्लपक्षः दिनांकः- ०९.०८.२०२१ से २२.०८.२०२१ तक												
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्तः**		**नक्षत्रान्तः**		**योगान्तः**		**करणान्तः**		**योगः**	**सू. उ.**	**सू. अ.**
09	चं	१	१८:२९	श्लेषा	१०:२७	वरीयान	२३:४७	किं	०२:५७	सौम्य	०५:२१	०६:३९
10	मं	२	१७:५५	मघा	१०:४४	परिध	२२:१३	वा	०२:०९	कालदण्ड	०५:२१	०६:३९
11	बु	३	१४:५३	पू.फा.	१०:३४	शिव	२०:१८	तै	००:०७	सुस्थिर	०५:२२	०६:३८
12	गु	४	१५:२६	उ.फा.	०९:५७	सिद्ध	१८:०४	भ	२५:०८	मातंग	०५:२३	०६:३७
13	शु	५	१३:३८	हस्त	०९:०१	साध्य	१५:३२	वा	२०:३८	अमृत	०५:२३	०६:३७
14	श	६	११:३४	चित्रा	०७:४६	शुभ	१२:४८	तै	१५:२५	काण	०५:२४	०६:३६
15	र	७	०९:१६	स्वाती विशाखा	०६:१८ २८:४०	शुक्ल	०९:५२	व	०९:४१	लुम्बक	०५:२४	०६:३६
16	चं	८ ९	०६:५२ २८:२२	अनुराधा	२७:००	ब्रह्म ऐन्द्र	०६:५२ २७:४७	वव	०३:३७	मानस	०५:२५	०६:३५
17	मं	१०	२५:५७	ज्येष्ठा	२५:२२	वैधृति	२४:४६	तै	२४:२०	मुद्गर	०५:२६	०६:३४
18	बु	११	२३:३७	मूल	२३:४९	विष्कुम्भ	२१:४८	व	१८:२२	ध्वज	०५:२६	०६:३४
19	गु	१२	२१:२९	पू.षा.	२२:२८	प्रीति	१९:००	वव	१२:४६	धाता	०५:२७	०६:३३
20	शु	१३	१९:३६	उ.षा.	२१:२३	आयुष्यमान	१६:२३	कौ	०७:४२	आनन्द	०५:२८	०६:३२
21	श	१४	१८:०२	श्रवण	२०:३८	सौभाग्य	१४:०२	गर	०३:२३	सुस्थिर	०५:२८	०६:३२
22	र	१५	१६:५३	धनिष्ठा	२०:१७	शोभन	११:५९	वव	२८:३०	मातंग	०५:२९	०६:३१

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं सौम्यगोल: वर्षार्त्तु: भाद्रपद कृष्णपक्ष: दिनांक:- २३.०८.२०२१ से ०७.०९.२०२१ तक													
अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
23	चं	१	१६:१२	शतभिष	२०:२२	अतिगण्ड	१०:१८	कौ	२६:४४	अमृत	०५:३०	०६:३०
24	मं	२	१५:५७	पू.भा.	२०:५७	सुकर्मा	०८:५९	गर	२६:१०	काण	०५:३०	०६:३०
25	बु	३	१६:१८	उ.भा.	२२:०३	धृति	०८:०५	भ	२६:५७	लुम्बक	०५:३१	०६:२९
26	गु	४	१७:०९	रेवती	२३:३८	शूल	०७:३६	वा	२९:०२	मित्र	०५:३२	०६:२८
27	शु	५	१८:२५	अश्विनी	२५:३८	गण्ड	०७:२६	कौ	००:३८	वज्र	०५:३२	०६:२८
28	श	६	२०:०६	भरणी	२७:५९	वृद्धि	०७:३९	गर	०४:१८	ध्वांक्ष	०५:३३	०६:२७
29	र	७	२२:०२	कृत्तिका	समस्त	ध्रुव	०८:०६	भ	०८:४७	धूम्र	०५:३४	०६:२६
30	चं	८	२४:०६	कृत्तिका	०६:३३	व्यघात	०८:४१	वा	१३:४६	सुस्थिर	०५:३४	०६:२६
31	मं	९	२६:०६	रोहिणी	०९:११	हर्षण	०९:२०	तै	१८:३९	मातंग	०५:३५	०६:२५
01सितम्ब	बु	१०	२७:५३	मृगशिरा	११:४१	वज्र	०९:५२	व	२३:३०	अमृत	०५:३६	०६:२४
02	गु	११	२९:११	आर्द्रा	१३:५६	सिद्धि	१०:१४	वव	२७:२१	काण	०५:३७	०६:२३
03	शु	१२	समस्त	पनर्वसु	१५:४७	व्यतिपात	१०:१७	कौ	३०:२८	लुम्बक	०५:३७	०६:२३
04	श	१२	०६:१८	पुष्य	१७:१२	वरीयान	०९:५९	तै	०१:४०	मित्र	०५:३८	०६:२२
05	र	१३	०६:४९	श्लेषा	१८:०८	परिध	०९:१८	व	०२:५४	वज्र	०५:३९	०६:२१
06	चं	१४	०६:४६	मघा	१८:३१	शिव	०८:१२	श	०२:४८	ध्वांक्ष	०५:३९	०६:२१
07	मं	३० १	०६:१५ २९:१५	पू.फा.	१८:२७	सिद्ध साध्य	०६:४३ २८:५०	नाग	०१:२८	धूम्र	०५:४०	०६:२०

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं सौम्यगोल: वर्षार्त्तु: भाद्रपद शुक्लपक्ष: दिनांक:- ०८.०९.२०२१ से २०.०९.२०२१ तक												
अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
08	बु	२	२७:५१	उ.फा.	१७:५६	शुभ	२६:३९	वा	२७:११	प्रवर्धमान	०५:४१	०६:१९
09	गु	३	२६:०६	हस्त	१७:०६	शुक्ल	२४:११	तै	२३:१३	राक्षस	०५:४२	०६:१८
10	शु	४	२४:०४	चित्रा	१५:५३	ब्रह्म	२१:२७	व	१८:२८	मुसल	०५:४२	०६:१८
11	श	५	२१:४९	स्वाती	१४:२७	ऐन्द्र	१८:३३	वव	१३:०५	सिद्धि	०५:४३	०६:१७
12	र	६	१९:२६	विशाखा	१२:५२	वैधृति	१५:३२	कौ	०७:१५	उत्पात	०५:४४	०६:१६
13	चं	७	१६:५८	अनुराधा	११:११	विष्कुम्भ	१२:२७	गर	०१:११	मानस	०५:४४	०६:१६
14	मं	८	१४:३४	ज्येष्ठा	०९:३२	प्रीति	०९:२३	वव	२३:०३	मुद्गर	०५:४५	०६:१५
15	बु	९	१२:१६	मूल	०७:५८	आयुष्यमान सौभाग्य	०६:२२ २७:२८	कौ	१६:१५	ध्वज	०५:४६	०६:१४
16	गु	१०	१०:०९	पू.षा. उ.षा.	०६:३३ २९:२२	शोभन	२४:४७	गर	१०:५४	धाता	०५:४७	०६:१३
17	शु	११	०८:१६	श्रवण	२८:३३	अतिगण्ड	२२:२०	भ	०६:१२	धूम्र	०५:४७	०६:१३
18	श	१२ १३	०६:४४ २९:३४	धनिष्ठा	२८:०५	सुकर्मा	२०:११	वा	०२:१९	प्रवर्धमान	०५:४८	०६:१२
19	र	१४	२८:५३	शतभिष	२८:०३	धृति	१८:२३	गर	२८:३२	राक्षस	०५:४९	०६:११
20	चं	१५	२८:४०	पू.भा.	२८:३०	शूल	१६:५७	भ	२७:२२	मुसल	०५:५०	०६:१०

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं सौम्यगोल: शरदृतु: आश्विन कृष्णपक्ष: दिनांक:- २१.०९.२०२१ से ०६.१०.२०२१ तक													
अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
21	मं	१	२८:५९	उ.भा.	१७:२८	गण्ड	१५:५४	वा	२७:२९	सिद्धि	०५:५०	०६:१०
22	बु	२	२९:५०	रेवती	समस्त	वृद्धि	१५:१८	तै	२८:५५	उत्पात	०५:५१	०६:०९
23	गु	३	समस्त	रेवती	०६:५८	ध्रुव	१५:०२	व	३१:३६	मित्र	०५:५२	०६:०८
24	शु	३	०७:०९	अश्विनी	०८:५१	व्याघात	१५:०७	भ	०३:१३	वज्र	०६:५२	०६:०८
25	श	४	०८:५२	भरणी	११:०८	हर्षण	१५:२९	वा	०७:२७	ध्वांक्ष	०५:५३	०६:०७
26	र	५	१०:५०	कृत्तिका	१३:४०	वज्र	१६:०२	तै	१२:२०	धूम्र	०५:५४	०६:०६
27	चं	६	१२:५६	रोहिणी	१६:१७	सिद्धि	१६:३९	व	१७:३३	प्रवर्धमान	०५:५५	०६:०५
28	मं	७	१४:५८	मृगशिरा	१८:४९	व्यतिपात	१७:११	वव	२२:३७	राक्षस	०५:५५	०६:०५
29	बु	८	१६:४७	आर्द्रा	१९:०९	वरीयान	१७:३४	कौ	२७:०८	मुसल	०५:५६	०६:०४
30	गु	९	१८:१६	पुनर्वसु	२३:०७	परिध	१७:४१	गर	३०:४८	सिद्धि	०५:५७	०६:०३
01अक्टूबर	शु	१०	१९:१८	पुष्य	२४:३९	शिव	१७:२७	ब	०२:०४	उत्पात	०५:५८	०६:०२
02	श	११	१९:५०	श्लेषा	२५:४१	सिद्ध	१६:५१	वव	०४:००	मानस	०५:५८	०६:०२
03	र	१२	१९:५१	मघा	२६:१३	साध्य	१५:५१	कौ	०४:४१	मुद्गर	०५:५९	०६:०१
04	चं	१३	१९:२३	पू.फा.	२६:१६	शुभ	१४:२७	गर	०४:०५	ध्वज	०६:००	०६:००
05	मं	१४	१८:२५	उ.फा.	२५:५२	शुक्ल	१२:३९	भ	०२:१५	धाता	०६:०१	०५:५९
06	बु	३०	१७:०३	हस्त	२५:०६	ब्रह्म	१०:३१	नाग	२७:३२	आनन्द	०६:०२	०५:५८

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं सौम्यगोल: शरदृतु: आश्विन शुक्लपक्ष: दिनांक:- ०७.१०.२०२१ से २०.१०.२०२१ तक													
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्त:**		**नक्षत्रान्त:**		**योगान्त:**		**करणान्त:**		**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**	
07	गु	१	१५:२०	चित्रा	२३:५८	ऐन्द्र वैधृति	०८:०६ २९:२४	वव	२३:१४	चर	०६:०२	०५:५८
08	शु	२	१३:२०	स्वाती	२२:३६	विष्कुम्भ	२६:३१	कौ	१८:१२	गद	०६:०३	०५:५७
09	श	३	११:०७	विशाखा	२१:०३	प्रीति	२३:३०	गर	१२:३८	शुभ	०६:०४	०५:५६
10	र	४	०८:४६	अनुराधा	१९:२४	आयुष्मान	२०:२३	भ	०६:४४	मृत्यु	०६:०४	०५:५६
11	चं	५ ६	०६:२१ २७:५७	ज्येष्ठा	१७:४३	सौभाग्य	१७:१६	वा	००:३९	पद्म	०६:०५	०५:५५
12	मं	७	२५:४१	मूल	१६:०७	शोभन	१४:१२	गर	२१:४८	छत्र	०६:०६	०५:५४
13	बु	८	२३:३४	पू.षा.	१४:४०	अतिगण्ड	११:१३	भ	१६:१८	श्रीवत्स	०६:०६	०५:५४
14	गु	९	२१:४५	उ.षा.	१३:२६	सुकर्मा धृति	०८:२७ २९:५३	वा	११:२२	सौम्य	०६:०७	०५:५३
15	शु	१०	२०:१४	श्रावण	१२:३३	शूल	२७:३८	तै	०७:१०	धूम्र	०६:०८	०५:५२
16	श	११	१९:०६	धनिष्ठा	११:५७	गण्ड	२५:४१	व	०३:५०	प्रवर्धमान	०६:०८	०५:५२
17	र	१२	१८:२७	शतभिष	११:४९	वृद्धि	२४:०६	वव	०१:३५	राक्षस	०६:०९	०५:५१
18	चं	१३	१८:१६	पू.भा.	१२:१०	ध्रुव	२२:५६	कौ	००:३०	मुसल	०६:१०	०५:५०
19	मं	१४	१८:३७	उ.भा.	१३:०१	व्याघात	२२:१०	गर	००:४०	सिद्धि	०६:११	०५:४९
20	बु	१५	१९:२९	रेवती	१४:२२	हर्षण	२१:४७	भ	०२:१०	उत्पात	०६:११	०५:४९

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं याम्यगोल: शरदृतु: कार्तिककृष्णपक्ष: दिनांक:- २१.१०.२०२१ से ०४.११.२०२१ तक													
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्त:**		**नक्षत्रान्त:**		**योगान्त:**		**करणान्त:**		**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**	
21	गु	१	२०:५०	अश्विनी	१६:१०	वज्र	२१:४५	वा	०४:५५	मानस	०६:१२	०५:४८	
22	शु	२	२२:३४	भरणी	१८:२२	सिद्धि	२२:०२	तै	०८:४४	मुद्गर	०६:१३	०५:४७	
23	श	३	२४:३५	कृत्तिका	२०:५०	व्यतिपात	२२:३०	व	१३:२३	ध्वज	०६:१४	०५:४६	
24	र	४	२६:४३	रोहिणी	२३:२७	वरीयान	२३:०५	वव	१८:३३	धाता	०६:१४	०५:४६	
25	चं	५	२८:४७	मृगशिरा	२६:०२	परिध	२३:३८	कौ	२३:४७	आनन्द	०६:१५	०५:४५	
26	मं	६	समस्त	आर्द्रा	२८:२३	शिव	२४:०२	गर	२८:३९	चर	०६:१६	०५:४४	
27	बु	६	०६:३९	पुनर्वसु	समस्त	सिद्ध	२४:१३	व	००:५७	गद	०६:१६	०५:४४	
28	गु	७	०८:१०	पुनर्वसु	०६:२९	साध्य	२४:०३	वव	०४:४३	सिद्धि	०६:१७	०५:४३	
29	शु	८	०९:१४	पुष्य	०८:०७	शुभ	२१:३३	कौ	०७:१८	उत्पात	०६:१८	०५:४२	
30	श	९	०९:४८	श्लेषा	०९:१६	शुक्ल	२२:३७	गर	०८:४५	मानस	०६:१८	०५:४२	
31	र	१०	०९:५१	मघा	०९:५७	ब्रह्म	२१:१९	भ	०८:५०	मुद्गर	०६:१९	०५:४१	
01नवम्ब	चं	११	०९:२४	पू.फा.	१०:०७	ऐन्द्र	१९:३६	वा	०७:४१	ध्वज	०६:२०	०५:४०	
02	मं	१२	०८:२७	उ.फा.	०९:४८	वैधृति	१७:३२	तै	०५:१८	धाता	०६:२०	०५:४०	
03	बु	१३ १४	०७:०६ २९:२३	हस्त	०९:०६	विष्कुम्भ	१५:१०	व	०१:५२	आनन्द	०६:२१	०५:३९	
04	गु	३०	२७:२४	चित्रा	०८:०४	प्रीति	१२:३२	च	२५:०६	चर	०६:२२	०५:३८	

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं याम्यगोल: शरदृतु: कार्तिकशुक्लपक्ष: दिनांक:- ०५.११.२०२१ से १९.११.२०२१ तक												
अं. ता.	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू. उ.	सू. अ.
05	शु	१	२५:१३	स्वाती विशाखा	०६:४४ २९:१३	आयुष्यमान	०९:३९	किं	१९:५२	गद	०६:२२	०५:३८
06	श	२	२२:५३	अनुराधा	२७:३५	सौभाग्य शोभन	०६:३८ २७:३१	वा	१४:१२	अमृत	०६:२३	०५:३७
07	र	३	२०:२९	ज्येष्ठा	२५:५३	अतिगण्ड	२४:२०	तै	०८:१६	काण	०६:२३	०५:३७
08	चं	४	१८:०८	मूल	२४:१६	सुकर्मा	२१:१४	व	०२:१८	लुम्बक	०६:२४	०५:३६
09	मं	५	१५:५५	पू.षा.	२२:४६	धृति	१८:१४	वा	२३:४४	मित्र	०६:२५	०५:३५
10	बु	६	१३:५०	उ.षा.	२१:२८	शूल	१५:२१	तै	१८:३२	वज्र	०६:२५	०५:३५
11	गु	७	१२:०२	श्रवण	२०:२८	गण्ड	१२:४३	व	१४:००	ध्वज	०६:२६	०५:३४
12	शु	८	१०:३३	धनिष्ठा	१९:४८	वृद्धि	१०:१९	वव	१०:१८	धाता	०६:२६	०५:३४
13	श	९	०९:२९	शतभिष	१९:३३	ध्रुव	०८:१६	कौ	०७:३६	आनन्द	०६:२७	०५:३३
14	र	१०	०८:५२	पू.भा.	१९:३७	व्याघात हर्षण	०६:३४ २९:१४	गर	०६:०१	चर	०६:२८	०५:३२
15	चं	११	०८:४३	उ.भा.	२०:२९	वज्र	२८:१८	भ	०५:३८	गद	०६:२८	०५:३२
16	मं	१२	०९:०८	रेवती	२१:४३	सिद्धि	२७:४७	वा	०६:३८	शुभ	०६:२९	०५:३१
17	बु	१३	१०:०३	अश्विनी	२३:२३	व्यतिपात	२७;३६	तै	०८:५६	मृत्यु	०६:२९	०५:३१
18	गु	१४	११:२६	भरणी	२५:३०	वरीयान	२७:४७	व	१२:२०	पद्म	०६:३०	०५:३०
19	शु	१५	१३:१२	कृत्तिका	२७:५४	परिध	२८:१०	वव	१६:४४	छत्र	०६:३०	०५:३०

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं याम्यगोल: हेमन्तर्त्तु: मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष: दिनांक:- २०.११.२०२१ से ०४.१२.२०२१ तक												
अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
20	श	१	१५:१४	रोहिणी	३०:३०	शिव	२८:४२	कौ	२१:४८	श्रीवत्स	०६:३१	०५:२९
21	र	२	१७:१४	मृगशिरा	समस्त	सिद्ध	२९:१५	गर	२७:१३	सौम्य	०६:३१	०५:२९
22	चं	३	१९:३१	मृगशिरा	०९:०७	साध्य	२९:४२	भ	३२:२७	आनन्द	०६:३२	०५:२८
23	मं	४	२१:२३	आर्द्रा	११:३३	शुभ	२९:५५	वव	०४:४७	चर	०६:३२	०५:२८
24	बु	५	२२:५५	पुनर्वसु	१३:४३	शुक्ल	२९:५२	कौ	०९:०१	गद	०६:३३	०५:२७
25	गु	६	२३:५८	पुष्य	१५:२७	ब्रह्म	२९:२७	र	१२:१३	शुभ	०६:३३	०५:२७
26	शु	७	२४:३२	श्लेषा	१६:४४	ऐन्द्र	२८:३८	भ	१४:१५	मृत्यु	०६:३३	०५:२७
27	श	८	२४:३६	मघा	१७:३१	वैधृति	२७:२६	वा	१५:०१	पद्म	०६:३४	०५:२६
28	र	९	२४:०८	पू.फा	१७:४७	विष्कुम्भ	२५:४८	तै	१४:३०	छत्र	०६:३४	०५:२६
29	चं	१०	२३:१३	उ.फ	१७:३५	प्रीति	२३:५१	व	१२:४५	श्रीवत्स	०६:३५	०५:२५
30	मं	११	२१:५१	हस्त	१६:५७	आयुष्यमान	२१:३२	वव	०९:५२	सौम्य	०६:३५	०५:२५
01दिसम्ब	बु	१२	२०:०९	चित्रा	१६:०१	सौभाग्य	१८:५७	कौ	०६:०३	कालदण्ड	०६:३५	०५:२५
02	गु	१३	१८:११	स्वाति	१४:४५	शोभन	१६:०८	गर	०१:२७	सुस्थिर	०६:३६	०५:२४
03	शु	१४	१५:५९	विशाखा	१३:१६	अतिगण्ड	१३:०८	श	२३:२८	मातंग	०६:३६	०५:२४
04	श	३०	१३:४०	अनुराधा	११:३८	सुकर्मा	१०:०१	नाग	१७:३९	अमृत	०६:३६	०५:२४

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं याम्यगोल: हेमन्तर्त्तु: मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष: दिनांक:- ०५.१२.२०२१ से १९.१२.२०२१ तक													
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्त:**		**नक्षत्रान्त:**		**योगान्त:**		**करणान्त:**		**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**
05	र	१	११:१८	ज्येष्ठा	०९:५८	धृति शूल	०६:५१ २७:४३	वव	११:४२	काण	०६:३७	०५:२३
06	चं	२	०८:५९	मूल	०८:१९	गण्ड	२४:३८	कौ	०५:५५	लुम्बक	०६:३७	०५:२३
07	मं	३ ४	०६:४६ २८:४५	पू.षा. उ.षा.	०६:४६ २९:२४	वृद्धि	२१:४१	गर	००:२२	मित्र	०६:३७	०५:२३
08	बु	५	२६:५९	श्रवण	२८:२०	ध्रुव	१८:५७	वव	२३:०६	छत्र	०६:३८	०५:२२
09	गु	६	२५:३४	धनिष्ठा	२७:३४	व्याघात	१६:२८	कौ	१९:०७	श्रीवत्स	०६:३८	०५:२२
10	शु	७	२४:३२	शतभिष	२७:१२	हर्षण	१४:१६	गर	१६:०३	सौम्य	०६:३८	०५:२२
11	श	८	२३:५८	पू.भा.	२७:१८	वज्र	१२:२४	भ	१४:०४	कालदण्ड	०६:३८	०५:२२
12	र	९	२३:५४	उ.भा.	२७:५३	सिद्धि	१०:५६	वा	१३:१६	सुस्थिर	०६:३८	०५:२२
13	चं	१०	२४:२३	रेवती	२९:००	व्यतिपात	०९:५२	तै	१३:४६	मातंग	०६:३९	०५:२१
14	मं	११	२५:२२	अश्विनी	३०:३३	वरीयान	०९:१३	व	१५:३४	अमृत	०६:३९	०५:२१
15	बु	१२	२६:४८	भरणी	समस्त	परिध	०८:५३	वव	१८:३५	काण	०६:३९	०५:२१
16	गु	१३	२८:३७	भरणी	०८:३४	शिव	०८:५६	कौ	२२:३८	पद्म	०६:३९	०५:२१
17	शु	१४	समस्त	कृत्तिका	१०:५५	सिद्ध	०९:१४	गर	२७:०३	छत्र	०६:३९	०५:२१
18	श	१४	०६:४१	रोहिणी	१३:२९	साध्य	०९:४३	व	००:०५	श्रीवत्स	०६:३९	०५:२१
19	र	१५	०८:५२	मृगशिरा	१६:०७	शुभ	१०:१५	वव	०५:३२	सौम्य	०६:३९	०५:२१

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ याम्यायनं याम्यगोल: हेमन्तर्त्तु: पौषकृष्णपक्ष: दिनांक:- २०.१२.२०२१ से ०२.०१.२०२२ तक

अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
20	चं	१	१०:५८	आर्द्रा	१८:३६	शुक्ल	१०:४३	कौ	१०:४७	कालदण्ड	०६:३९	०५:२१
21	मं	२	१२:४९	पुनर्वसु	२०:५१	ब्रह्म	११:०१	गर	१५:२५	सुस्थिर	०६:३९	०५:२१
22	बु	३	१४:१९	पुष्य	२२:४२	ऐन्द्र	११:०३	भ	१९:१०	मातंग	०६:३९	०५:२१
23	गु	४	१५:२१	श्लेषा	२४:०७	वैधृति	१०:४३	वा	२१:४६	अमृत	०६:३९	०५:२१
24	शु	५	१५:५४	मघा	२५:०१	विष्कुम्भ	१०:०३	तै	२३:०८	काण	०६:३९	०५:२१
25	श	६	१५:५५	पू.फा.	२५:२५	प्रीति	०८:५७	व	२३:१०	लुम्बक	०६:३९	०५:२१
26	र	७	१५:२६	उ.फा.	२५:१९	आयुष्यमान सौभाग्य	०७:२८ २९:३६	वव	२१:५७	मित्र	०६:३९	०५:२१
27	चं	८	१४:२७	हस्त	२४:४८	शोभन	२७:२४	कौ	१९:३१	वज्र	०६:३९	०५:२१
28	मं	९	१३:०५	चित्रा	२३:५७	अतिगण्ड	२४:५५	गर	१६:०६	ध्वाक्ष	०६:३९	०५:२१
29	बु	१०	११:२३	स्वाती	२२:४५	सुकर्मा	२२:०९	भ	११:४९	धूम्र	०६:३९	०५:२१
30	गु	११	०९:२३	विशाखा	२१:१९	धृति	१९:१२	वा	०६:५१	प्रवर्धमान	०६:३९	०५:२१
31	शु	१२ १३	०७:११ २८:५२	अनुराधा	१९:४३	शूल	१६:०७	तै	०१:२१	राक्षस	०६:३९	०५:२१
01जनवरी	श	१४	२६:२९	ज्येष्ठा	१८:०२	गण्ड	१२:५८	भ	२२:३५	मुसल	०६:३८	०५:२२
02	र	३०	२४:०९	मूल	१६:२३	वृद्धि	०९:४८	च	१६:४३	सिद्धि	०६:३८	०५:२२

श्रीसंवत् २०७८ शकः १९४३ याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्तर्त्तुः पौषशुक्लपक्षः दिनांकः-०३.०१.२०२२ से १७.०१.२०२२ तक												
अं. ता.	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू. उ.	सू. अ.
03	चं	१	२१:५८	पू.षा.	१४:४८	ध्रुव व्याघात	०६:४१ २७:४१	किं	११:०४	उत्पात	०६:३८	०५:२२
04	मं	२	१९:५८	उ.षा.	१३:२४	हर्षण	२४:५२	वा	०५:४९	मानस	०६:३८	०५:२२
05	बु	३	१७:१३	श्रवण	१२:१५	वज्र	२२:१७	तै	०१:०९	छत्र	०६:३८	०५:२२
06	गु	४	१६:५०	धनिष्ठा	११:२६	सिद्धि	१९:५८	भ	२५:३२	श्रीवत्स	०६:३७	०५:२३
07	शु	५	१५:५०	शतभिष	१०:५८	व्यतिपात	१७:५९	वा	२३:०३	सौम्य	०६:३७	०५:२३
08	श	६	१५:२०	पू.भा.	१०:५७	वरीयान	१६:२२	तै	२१:४७	कालदण्ड	०६:३७	०५:२३
09	र	७	१५:१९	उ.भा.	१२:२५	परिध	१५:०९	व	२१:४६	सुस्थिर	०६:३७	०५:२३
10	चं	८	१५:५०	रेवती	११:२४	शिव	१४:२०	वव	२३:०४	मातंग	०६:३६	०५:२४
11	मं	९	१६:५१	अश्विनी	१३:५३	सिद्ध	१३:५४	कौ	२५:३७	अमृत	०६:३६	०५:२४
12	बु	१०	१८:२०	भरणी	१५:४९	साध्य	१३:५०	गर	२९:१९	काण	०६:३६	०५:२४
13	गु	११	२०:०९	कृत्तिका	१८:०५	शुभ	१४:०३	व	०१:३७	लुम्बक	०६:३५	०५:२५
14	शु	१२	२२:१५	रोहिणी	२०:३७	शुक्ल	१४:२८	वव	०६:३३	मित्र	०६:३५	०५:२५
15	श	१३	२४:२६	मृगशिरा	२३:१४	ब्रह्म	१५:००	कौ	११:५५	वज्र	०६:३४	०५:२६
16	र	१४	२६:३२	आर्द्रा	२५:४७	ऐन्द्र	१५:३०	गर	१७:१७	ध्वांक्ष	०६:३४	०५:२६
17	चं	१५	१६:२२	पुनर्वसु	२८:०५	वैधृति	१५:५२	भ	२२:१२	धूम्र	०६:३४	०५:२६

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं याम्यगोल: शिशिरर्त्तु: माघकृष्णपक्ष: दिनांक:-१८.०१.२०२२ से ०१.०२.२०२२ तक												
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्तः**		**नक्षत्रान्तः**		**योगान्तः**		**करणान्तः**		**योगः**	**सू. उ.**	**सू. अ.**
18	मं	१	२९:५०	पुष्य	३०:०२	विष्कुम्भ	१५:५९	वा	२२:२०	प्रवर्धमान	०६:३३	०५:२७
19	बु	२	समस्त	श्लेषा	समस्त	प्रीति	१५:४७	तै	२९:२६	राक्षस	०६:३३	०५:२७
20	गु	२	०६:४८	श्लेषा	०७:३२	आयुष्यमान	१५:१५	गर	००:४१	अमृत	०६:३२	०५:२८
21	शु	३	०७:१८	मघा	०८:३४	सौभाग्य	१४:१८	भ	०१:५६	काण	०६:३२	०५:२८
22	श	४	०७:१६	पू.फा	०९:०३	शोभन	२४:५७	वा	०१:५२	लुम्बक	०६:३१	०५:२९
23	र	५ ६	०६:४४ २९:४४	उ.फा.	०९:०६	अतिगण्ड	२३:१४	तै	००:३३	मित्र	०६:३१	०५:२९
24	चं	७	२८:१९	हस्त	०८:३९	सुकर्मा	२१:०८	भ	२६:१८	वज्र	०६:३०	०५:३०
25	मं	८	२६:३५	चित्रा	०७:५२	धृति शूल	०६:४५ २८:०५	वा	२२:३३	ध्वांक्ष	०६:३०	०५:३०
26	बु	९	२४:३३	स्वाती विशाखा	०६:४४ २९:२१	गण्ड	२५:११	तै	१७:४२	धुम्र	०६:२९	०५:३१
27	गु	१०	२२:२१	अनुराधा	२७:४७	वृद्धि	२२:१०	व	१२:२६	आनन्द	०६:२९	०५:३१
28	शु	११	२०:००	ज्येष्ठा	२६:०७	ध्रुव	१९:०२	वव	०६:४६	चर	०६:२८	०५:३२
29	श	१२	१७:३९	मूल	२४:२७	व्याघात	१५:५२	कौ	००:५४	गद	०६:२८	०५:३२
30	र	१३	१५:१९	पू.षा.	२२:५०	हर्षण	१२:४४	व	२२;०९	शुभ	०६:२७	०५:३३
31	चं	१४	१३:०७	उ षा.	२१:२३	वज्र	०९:४२	श	१६:४२	मृत्यु	०६:२६	०५:३४
01फरवरी	मं	३०	११:०८	श्रवण	२०:१०	सिद्धि व्यतिपात	०६:४९ २८:१०	नाग	११:४५	लुम्बक	०६:२६	०५:३४

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं याम्यगोल: शिशिरर्त्तु: माघशुक्लपक्ष: दिनांक:-०२.०२.२०२२ से १६.०२.२०२२ तक												
अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
02	बु	१	०९:२४	धनिष्ठा	१९:१७	वरीयान	२५:४६	वव	०७:२८	मित्र	०६:२५	०५:३५
03	गु	२	०८:०३	शतभिष	१८:४३	परिध	२३:४१	कौ	०४:०५	वज्र	०६:२५	०५:३५
04	शु	३	०७:०४	पू.भा.	१८:३६	शिव	२१:५६	गर	०१:४१	ध्वांक्ष	०६:२४	०५:३६
05	श	४	०६:३५	उ.भा.	१८:५७	सिद्ध	२०:३५	भ	००:३०	धूम्र	०६:२३	०५:३७
06	र	५	०६:३७	रेवती	१९:४५	साध्य	१९:३९	वा	००:३४	प्रवर्धमान	०६:२३	०५:३७
07	चं	६	०७:१०	अश्विनी	२१:११	शुभ	१९:०८	तै	०१:५९	राक्षस	०६:२२	०५:३८
08	मं	७	०८:१२	भरणी	२३:०१	शुक्ल	१८:५६	व	०४:३५	मुसल	०६:२२	०५:३८
09	बु	८	०९:४२	कृत्तिका	२५:१४	ब्रह्म	१८:४१	वव	०८:२२	सिद्धि	०६:२१	०५:३९
10	गु	९	११:३३	रोहिणी	२७:४२	ऐन्द्र	१९:२७	कौ	१३:०२	उत्पात	०६:२०	०५:४०
11	शु	१०	१३:३९	मृगशिरा	समस्त	वैधृति	१८:५८	गर	१८:१७	मानस	०६:२०	०५:४०
12	श	११	१५:४९	मृगशिरा	०६:१९	विष्कुम्भ	२०:३०	भ	२३:४४	वज्र	०६:१९	०५:४१
13	र	१२	१७:५१	आर्द्रा	०८:५३	प्रीति	२०:५६	वा	२८:५३	ध्वांक्ष	०६:१८	०५:४२
14	चं	१३	१९:४०	पुनर्वसु	११:१६	आयुष्यमान	२१:१२	कौ	०१:०९	धूम्र	०६:१८	०५:४२
15	मं	१४	२१:०४	पुष्य	१३:१९	सौभाग्य	२१:०९	गर	०५:११	प्रवर्धमान	०६:१७	०५:४३
16	बु	१५	२२:०१	श्लेषा	१४:५५	शोभन	२०:४४	भ	०८:१०	राक्षस	०६:१६	०५:४४

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं याम्यगोल: शिशिरर्त्तु: फाल्गुन कृष्णपक्ष: दिनांक:-१७.०२.२०२२ से ०२.०३.२०२२ तक												
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्त:**		**नक्षत्रान्त:**		**योगान्त:**		**करणान्त:**		**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**
17	गु	१	२२:२७	मघा	१६:०४	अतिगण्ड	१९:५७	वा	०९:५५	मुसल	०६:१६	०५:४४
18	शु	२	२२:२०	पू.फा.	१६:४१	सुकर्मा	१८:४५	तै	१०:२०	सिद्धि	०६:१५	०५:४५
19	श	३	२१:३४	उ.फा	१६:४९	धृति	१७:०८	व	०९:२८	उत्पात	०६:१४	०५:४६
20	र	४	२०:४०	हस्त	१६:२९	शूल	१५:११	वव	०७:२६	मानस	०६:१३	०५:४७
21	चं	५	१९:१३	चित्रा	१५:४६	गण्ड	१२:५४	कौ	०४:१९	मुद्गर	०६:१३	०५:४७
22	मं	६	१७:२५	स्वाती	१४:४२	वृद्धि	१०:२०	गर	००:१७	ध्वज	०६:१२	०५:४
23	बु	७	१५:२१	विशाखा	१३:२१	ध्रुव व्याघात	०७:३१ २८:३३	वव	२२:५६	धाता	०६:११	०५:४९
24	गु	८	१३:०७	अनुराधा	११:५०	हर्षण	२५:२९	कौ	१७:२१	आनन्द	०६:११	०५:४९
25	शु	९	१०:४६	ज्येष्ठा	१०:१३	वज्र	२२:१९	गर	११:२९	चर	०६:१०	०५:५०
26	श	१० ११	०८:२२ ३०:०३	मूल	०८:३०	सिद्धि	१९:१२	भ	०५:३३	गद	०६:०९	०५:५१
27	र	१२	२७:५०	पू षा. उ.षा.	०६:५२ २९:२४	व्यतिपात	१६:०८	कौ	२७:००	शुभ	०६:०८	०६:५२
28	चं	१३	२५:५१	श्रवण	२८:०८	वरीयान	१३:१३	गर	२१:४७	सिद्धि	०६:०८	०५:५२
01मार्च	मं	१४	२४:०९	धनिष्ठा	२७:१०	परिध	१०:३०	भ	१७:१२	उत्पात	०६:०७	०५:५३
02	बु	३०	२२:४७	शतभिष	२६:३१	शिव सिद्ध	०८:०२ २९:५३	च	१३:२४	मानस	०६:०६	०५:५४

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं याम्यगोल: शिशिरर्त्तु: फाल्गुन शुक्लपक्ष: दिनांक:-०३.०३.२०२२ से १८.०३.२०२२ तक														
अं. ता.	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू. उ.	सू. अ.
03	गु	१	२१:५०	पू.भा.	२६:१९	साध्य	२८:०३	किं	१०:३२	मुद्गर	०६:०६	०५:५४
04	शु	२	२१:२२	उ.भा.	२६:३४	शुभ	२६:३६	वा	०८:४७	ध्वज	०६:०५	०५:५५
05	श	३	२१:२३	रेवती	२७:२०	शुक्ल	२५:३३	तै	०८:१५	धाता	०६:०४	०५:५६
06	र	४	२१:५७	अश्विनी	२८:३६	ब्रह्म	२४:५६	व	०९:०१	आनन्द	०६:०३	०५:५७
07	चं	५	२३:५९	भरणी	समस्त	ऐन्द्र	२४:३९	वव	११:०२	चर	०६:०३	०५:५७
08	मं	६	२४:२८	भरणी	०६:१८	वैधृति	२४:४३	कौ	१४:१४	मुसल	०६:०२	०५:५८
09	बु	७	२६:१९	कृत्तिका	०८:२७	विष्कुम्भ	२५:०३	गर	१८:२७	सिद्धि	०६:०१	०५:५९
10	गु	८	२८:२३	रोहिणी	१०:५२	प्रीति	२५:३३	भ	२३:२२	उत्पात	०६:००	०६:००
11	शु	९	समस्त	मृगशिरा	१३:३०	आयुष्यमान	२६:०९	वा	२८:४०	मानस	०६:००	०६:००
12	श	९	०६:३१	आर्द्रा	१६:०५	सौभाग्य	२६:४१	कौ	०१:२१	मुद्गर	०५:५९	०६:०१
13	र	१०	०८:३२	पुनर्वसु	१८:३१	शोभन	२७:०१	गर	०६:२४	ध्वज	०५:५८	०६:०२
14	चं	११	१०:१६	पुष्य	२०:३१	अतिगण्ड	२७:०५	भ	१०:४७	धाता	०५:५७	०६:०३
15	मं	१२	११:३७	श्लेषा	२२:२१	सुकर्मा	२६:४५	वा	१४:११	आनन्द	०५:५७	०६:०३
16	बु	१३	१२:३२	मघा	२३:३६	धृति	२६:१०	तै	१६:२९	चर	०५:५६	०६:०४
17	गु	१४	१२:५४	पू.फा.	२४:२१	शूल	२५:०७	व	१७:२७	गद	०५:५५	०६:०५
18	शु	१५	१२:४४	उ फा.	२४:३५	गण्ड	२३:४०	वव	१७:०५	शुभ	०५:५४	०६:०६

श्रीसंवत् २०७८ शक: १९४३ सौम्यायनं याम्यगोल: वसन्तर्त्तु: चैत्रकृष्णपक्ष: दिनांक:-१९.०३.२०२२ से ०१.०४.२०२२ तक													
अं. ता.	**वार**	**तिथ्यान्त:**		**नक्षत्रान्त:**		**योगान्त:**		**करणान्त:**		**योग:**	**सू. उ.**	**सू. अ.**
19	श	१	१२:०५	हस्त	२४:२१	वृद्धि	२१:५०	कौ	१५:२८	मृत्यु	०५:५४	०६:०६
20	र	२	१०:५८	चित्रा	२३:४२	ध्रुव	१९:३९	गर	१२:४३	पद्म	०५:५३	०६:०७
21	चं	३	०९:२७	स्वाती	२२:४३	व्याघात	१७:१२	भ	०८:५८	छत्र	०५:५२	०६:०८
22	मं	४ ५	०७:३७ २९:३२	विशाखा	२१:२६	हर्षण	१४:२९	वा	०४:२४	श्रीवत्स	०५:५१	०६:०९
23	बु	६	२७:१५	अनुराधा	१९:५७	वज्र	११:३४	गर	२६:२२	सौम्य	०५:५१	०६:०९
24	गु	७	२४:५२	ज्येष्ठा	१८:१९	सिद्धि व्यतिपात	०८:३२ २९:२६	भ	२०:३३	कालदण्ड	०५:५०	०६:१०
25	शु	८	२२:२७	मूल	१६:३८	वरीयान	२६:१८	वा	१४:३४	सुस्थिर	०५:४९	०६:११
26	श	९	२०:०५	पू.षा.	१४:५९	परिध	२३:१५	तै	०८:३८	मातंग	०५:४८	०६:१२
27	र	१०	१५:५२	उ.षा.	१३:२९	शिव	२०:११	व	०३:५६	अमृत	०५:४८	०६:१२
28	चं	११	१५:५१	श्रवण	१२:०९	सिद्ध	१७:३३	वा	२५:०९	सिद्धि	०५:४७	०६:१३
29	मं	१२	१४:०८	धनिष्ठा	११:०६	साध्य	१५:०२	तै	२०:५५	उत्पात	०५:४६	०६:१४
30	बु	१३	१२:४५	शतभिष	१०:२३	शुभ	१२:४७	व	१७:३१	मानस	०५:४५	०६:१५
31	गु	१४	११:४९	पू.भा.	१०:०५	शुक्ल	१०:५४	श	१५:०९	मुद्गर	०५:४५	०६:१५
01अप्रैल	शु	३०	११:२०	उ.भा.	१०:१४	ब्रह्म	०९:२२	नाग	१४:०१	ध्वज	०५:४४	०६:१६

विवाह मुहूर्त २०७८

(इन मुहूर्तों में दोषादि का चिन्तन व विस्तृत निर्णय आवश्यक है|)

22.04.2021
25.04.2021
26.04.2021
27.04.2021
28.04.2021
29.04.2021
30.04.2021
01.05.2021
02.05.2021
03.05.2021
07.05.2021
08.05.2021
09.05.2021
12.05.2021
13.05.2021
14.05.2021
19.05.2021
20.05.2021
21.05.2021
22.05.2021
24.05.2021
26.05.2021
27.05.2021
28.05.2021
29.05.2021
30.05.2021
05.06.2021
11.06.2021
15.06.2021
16.06.2021
17.06.2021
18.06.2021
19.06.2021
20.06.2021
21.06.2021
22.06.2021
23.06.2021
24.06.2021
26.06.2021
01.07.2021
02.07.2021
03.07.2021
06.07.2021
07.07.2021
08.07.2021
12.07.2021
15.07.2021
16.07.2021
19.11.2021
20.11.2021
21.11.2021
26.11.2021
28.11.2021
29.11.2021
01.12.2021
02.12.2021
05.12.2021
07.12.2021
12.12.2021
13.12.2021
15.01.2022
20.01.2022
22.01.2022
23.01.2022
25.01.2022
27.01.2022
28.01.2022
29.01.2022
30.01.2022
31.01.2022
05.02.2022
06.02.2022
09.02.2022
10.02.2022
16.02.2022
17.02.2022
18.02.2022
19.02.2022

गृहारम्भ मुहूर्त

26.04.2021
28.01.2021
29.04.2021
21.05.2021
22.05.2021
24.05.2021
26.05.2021
17.07.2021
23.07.2021
24.07.2021
26.07.2021
19.08.2021
20.08.2021
23.08.2021
18.10.2021
20.10.2021
20.11.2021
10.12.2021
13.12.2021
10.02.2022
11.02.2022
14.02.2022
18.02.2022
19.02.2022

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त

07.05.2021
08.05.2021
21.05.2021
22.05.2021
24.05.2021
04.06.2021
19.06.2021
27.01.2022
05.02.2022
10.02.2022
11.02.2022

जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त

21.06.2021
04.08.2021
13.08.2021
14.08.2021
19.08.2021
20.08.2021
01.11.2021
10.11.2021
15.11.2021
29.11.2021
01.12.2021
02.12.2021
09.12.2021
10.12.2021
13.12.2021
14.02.2022

उपनयन मुहूर्त (व्रतबन्ध)

29.04.2021
13.05.2021
14.05.2021
17.05.2021
21.05.2021
23.05.2021
30.05.2021
31.05.2021
04.06.2021
11.06.2021
13.06.2021
17.06.2021
20.06.2021
21.06.2021
27.06.2021
07.07.2021
11.07.2021
12.07.2021
14.07.2021
16.07.2021
19.01.2022
27.01.2022
02.02.2022
03.02.2022
04.02.2022
06.02.2022
07.02.2022
10.02.2022
11.02.2022
14.02.2022
18.02.2022

व्रत-त्योहार विक्रम संवत् 2078, सन् 2021-22

13.04.2021- नवसंवत्सर 2078 विक्रमी, तेलगु नववर्षारंभ, वासन्तिक नवरात्रारंभ, झुलेलाल जयन्ती, बालेन्दु व्रत, वैशाखी

14.04.2021- सतू संक्रान्ति,सिन्धाराद्वितीया, सौर वैशाखमासारंभ, बंगला नववर्ष आरंभ, बहाग बिहू, अम्बेडकर जयंती,नेपाली वैशाखमासारंभ

18.04.2021- चैती छठ

20.04.2021- महानिशापूजा

21.04.2021- रामनवमी व्रत

23.04.2021- बाबू कुँवर सिंह जयन्ती, कामदा एकादशी

25.04.2021- महावीर जयंती

26.04.2021- व्रत पूर्णिमा

27.04.2021- हनुमत् जयंती, स्नान-दान पूर्णिमा

07.05.2021- वल्लभाचार्य जयंती, वरुथिनी एकादशी

09.05.2021- मास शिवरात्रि

11.05.2021- भौमवती अमावस्या

14.05.2021- परशुराम जयंती, अक्षय तृतीया

17.05.2021- शंकराचार्य जयंती

18.05.2021- गंगा सप्तमी

22.05.2021- मोहिनी एकादशी

25.05.2021- नृसिंह चतुर्दशी, व्रत पूर्णिमा

26.05.2021- बुद्ध पूर्णिमा, स्नान-दान पूर्णिमा

06.06.2021- अचला एकादशी

08.06.2021- मास शिवरात्रि

10.06.2021- अमावस्या

20.06.2021- गंगा दशहरा

21.06.2021- निर्जला एकादशी, भीम एकादशी

24.06.2021- संत कबीर जयन्ती, स्नान-दान व व्रत पूर्णिमा

05.07.2021- योगिनी एकादशी

08.07.2021- मास शिवरात्रि

09,10.07.2021- अमावस्या

12.07.2021- रथयात्रा

20.07.2021- हरिशयनी एकादशी

24.07.2021- गुरु पूर्णिमा

04.08.2021- कामदा एकादशी

06.08.2021- मास शिवरात्रि

08.08.2021- हरियाली अमावस्या

10.08.2021- करपात्री जयंती

11.08.2021- हरियाली तीज

13.08.2021- नाग पंचमी

15.08.2021- भारतीय स्वतंत्रता दिवस, गोस्वामी तुलसीदास जयंती

18.08.2021- पुत्रदा एकादशी

21.08.2021- श्रावणी, व्रत पूर्णिमा

22.08.2021- रक्षाबंधन, पूर्णिमा, संस्कृत दिवस, स्नान-दान पूर्णिमा

25.08.2021- कज्जली तीज, बहुला श्रीगणेश ४

28.08.2021- हलषष्ठी व्रत(ललही छठ)

30.08.2021- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

02.09.2021- जया एकादशी

05.09.2021- मास शिवरात्रि

06.09.2021- कुशोत्पाटिनी अमावस्या

07.09.2021- भौमवती अमावस्या

09.09.2021- हरितालिका तीज व्रत

10.09.2021- गणेश चतुर्थी, गणेश उत्सवारंभ

11.09.2021- ऋषि पंचमी

12.09.2021- लोलार्क षष्ठी

17.09.2021- विश्वकर्मा पूजा

19.09.2021- अनन्त चतुर्दशी व्रत, महारविवारव्रत

20.09.2021- महालयारम्भ

21.09.2021- पितृपक्षारम्भ, श्राद्ध तर्पणारम्भ

17.09.2021- पद्मा एकादशी

20.09.2021- पूर्णिमा

29.09.2021- जीवितपुत्रिकाव्रत

30.09.2021- मातृ नवमी

02.10.2021- महात्मा गाँधी, शास्त्री जयंती, इन्द्रा एकादशी

04.10.2021- मास शिवरात्रि

06.10.2021- सर्वपैतृ अमावस्या, पितृ विसर्जन

07.10.2021- शारदीय नवरात्रारंभ

13.10.2021- महाष्टमी व्रत

14.10.2021- महानवमी व्रत

15.10.2021- विजयादशमी

16.10.2021- पंपाकुशा एकादशी

19.10.2021- कोजागरी पुर्णिमा

20.10.2021- शरद पूर्णिमा, वाल्मीकि जयन्ती

24.10.2021- करवा चौथ

28.10.2021- अहोई अष्टमी

01.11.2021- रम्भा एकादशी

02.11.2021- धनतेरस, धन्वन्तरी जयन्ती

03.11.2021- नरक चतुर्दशी, हनुमान जयंती, मास शिवरात्रि

04.11.2021- दिपावली, महाकाली पूजा

05.11.2021- गोवर्धन पूजा

06.11.2021- भईयादूज, चित्रगुप्त पूजा

08.11.2021- रविषष्ठी व्रतारम्भ

10.11.2021- सूर्य षष्ठी (डाला छठ)

12.11.2021- गोपाष्टमी

13.11.2021- अक्षय नवमी

15.11.2021- हरिप्रबोधिनी एकादशी, तुलसी विवाह

17.11.2021- वैकुण्ठ चतुर्दशी

धर्मरक्षापञ्चाङ्ग २०२१-२२

19.11.2021- कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयंती, देव-दिपावली

27.11.2021- कालाष्टमी, भैरवाष्टमी

30.11.2021- उत्पन्ना एकादशी

02.12.2021- मास शिवरात्रि

04.12.2021- अमावस्या

05.12.2021- रुद्र व्रत

08.12.2021- विवाह पञ्चमी

14.12.2021- मोक्षदा एकादशी, गीता जयंती

18.12.2021-दत्तात्रेय जयंती, व्रत पूर्णिमा

19.12.2021- स्नान-दान पूर्णिमा

25.12.2021- बड़ा दिन, मालवीय जयंती

30.12.2021- सफला एकादशी

01.01.2022- मास शिवरात्रि

02.01.2022- अमावस्या

05.01.2022- गुरु गोविंद सिंह जयन्ती

09.01.2022- गुरु गोविंद सिंह जयन्ती (प्राचीन मतानुसार)

13.01.2022- पुत्रदा एकादशी

15.01.2022- मकर संक्रांति पुण्यकाल, खिचड़ी पर्व

17.01.2022- पूर्णिमा

21.01.2022- गणेश चतुर्थी

23.01.2022- सुभाषचंद्र जयन्ती

26.01.2022- भारतीय गणतंत्र दिवस

28.01.2022- षटतिला एकादशी

30.01.2022- मास शिवरात्रि

01.02.2022- मौनी अमावस्या, मकरात

05.02.2022- वसंतपंचमी

10.02.2022- महानन्दा नवमी, हरसूब्रह्मदेव जयंती

12.02.2022- जया एकादशी

16.02.2022- माघी पूर्णिमा, संत रविदास जयंती

24.02.2022- जानकी जयंती

26.02.2022- विजया एकादशी

01.03.2022- महाशिवरात्रि

02.03.2022- अमावस्या

14.03.2022- रंगभरी एकादशी

17.03.2022- होलिका दहन, व्रत पूर्णिमा

18.03.2022- होली काशी में, चतुःषष्ठियात्रा, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयंती, स्नान-दान पूर्णिमा

19.03.2022- रंगोत्सव सर्वत्र (होली)

22.03.2022- रंगपंचमी

28.03.2022- पापमोचनी एकादशी

29.03.2022- बुढवामंगल पर्व

30.03.2022- वारुणीपर्वयोग, मास शिवरात्रि

01.04.2022- चान्द्रसम्वत्सर 2078 समाप्त, अमावस्या

।।स्वप्न विचार।।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अग्नि उठाना	कष्ट	गुरु दर्शन	कार्यसफलता	दुग्धस्नान	धनलाभ	बारात दर्शन	चिन्ता	लौह दर्शन	स्वास्थहानि
अग्नि दर्शन	शुभकार्य	गुलाब दर्शन	मनोकामनपूर्ण	दुर्घटना दर्शन	रोगसम्भावना	बिच्छुदंश	कष्टभय	वर्षा दर्शन	हानि,चिन्ता
आग लगी दर्शन	दु:ख की प्राप्ति	घर जलना	लाभ	देवदर्शन	धनलाभ	भगिनी दर्शन	सौभाग्यवृद्धि	वाटिका दर्शन	सुखप्राप्ति
अजा दर्शन	धनलाभ	गृहनिर्माण	प्रसिद्धिप्राप्ति	देवस्थल दर्शन	सुखमयजीवन	भाषण श्रवण	वादविवाद	विकृतशरीर दर्शन	दु:खप्राप्ति
अर्थी दर्शन	सफलता	गौ दुग्धपान	धनलाभ	जुआं खेलना	धनहानि	भूकम्प दर्शन	सन्तानकष्ट	विदेशगमन	कार्यावरुद्ध
आकाश से गिरना	चिन्ता,मानहानि	ग्रहण दर्शन	रोग,चिन्ता	द्विचक्रचालन दर्शन	कार्यसिद्धि	भोजन को पचाना	रोग	विधवा दर्शन	हानि
बाजार का दर्शन	धनलाभ	चन्द्र दर्शन	बन्धन	धर्मशास्त्र श्रवण	धनप्राप्ति	मदिरापान	मृत्यु	विमान दर्शन	सौभाग्यसूचक
आम खाना	लाभ	चिता दर्शन	सफलता	दौड़ना	समस्या	मधुमक्खी दर्शन	शुभफल	विवाह	मृत्यु
आशीर्वाद ग्रहण	धनलाभ	छिपकली दर्शन	दुर्भाग्यसंकेत	धूपदर्शन	शत्रुनाश	मन्दिर दर्शन	धनलाभ	विषभक्षण	परेशानी
उत्तरदिग्गमन	गृहत्याग	जलपान	भाग्योदय	ध्वजदर्शन	धनलाभ	मयूर दर्शन	शोक	वृद्धस्त्री दर्शन	दु:खप्राप्ति
जूता पहनना	सम्मानप्राप्ति	जल में गिरना	चिन्ता	मगरमच्छ दर्शन	शत्रुकष्ट	मल्लयुद्ध दर्शन	मुकदमा	बैल दर्शन	धर्मकार्य
ऊँट का दर्शन	भय	जादुगर दर्शन	अशुभलक्षण	नदीदर्शन	आकांक्षापूर्ति	महात्मा दर्शन	धनप्राप्ति	बैल द्वारा मारना	हानि
ऊँट से गिरना	अवनति	टिकट ग्रहण	पदत्याग	नागदर्शन	लज्जित	मीनदर्शन	मङ्गलकार्य	वेद्य दर्शन	रोग
गर्मजलपान	अशुभ	डोली दर्शन	समस्यायुक्त	नृत्यदर्शन	मृत्यु	मिष्ठान्नखाना	संकट	शवदर्शन	सफलता
औषधि ग्रहण	स्वस्थ	चावल खाना	शुभसमाचार	निराश	सफलता	मुद्राप्राप्ति	रोजगार	शस्त्रदर्शन	युद्ध
कच्चाफल दर्शन	अशुभ	तपस्वी दर्शन	आत्मोन्नति	पक्काफलदर्शन	शुभ	मुण्डन	मृत्यु	शस्त्र गिरना	पराजय
कन्या का दर्शन	तीर्थयात्रा	पान खाना	मिलाप	पदच्युतदर्शन	मृत्यु	मूषक दर्शन	दुर्भाग्यसूचक	शस्त्र उठाना	विजय
कपिल वस्त्रधारण	ख्याति	ताम्र दर्शन	यात्रादुर्घटना	पर्वदर्शन	शुभ	यज्ञदर्शन	सौभाग्यसूचक	शुकदर्शन	धनलाभ
कबूतर दर्शन	शुभसंदेश	तिल खाना	ऋण	पश्चिमदिग्गमन	बाधायुक्त	यमुना दर्शन	रोगाप्ति	श्रृंगार करना	अपमान
कमल दर्शन	धनप्राप्ति	तीर्थ स्नान	त्याग	पहरेदार दर्शन	चोरी	युवती दर्शन	नगदलाभ	सफेद कुत्ते पर बैठना	सुखसमृद्धिप्राप्ति
करतल दर्शन	प्रसन्नताप्राप्ति	तैलपान	मृत्यु	प्रसन्नता दर्शन	विफलता	रक्त दर्शन	उन्नति	शौचगमन	व्यय
कौआ दर्शन	अशुभ	त्रिशूल दर्शन	सफलताप्राप्ति	प्रसाद प्राप्ति	धनलाभ	रजक दर्शन	सफलता	समुद्र दर्शन	धनलाभ
कारागारगमन	बन्धनग्रस्त	दक्षिणदिग्गमन	रोग	पत्थर दर्शन	विपत्ति	रजत दर्शन	विश्वासघात	समाचार पढना	सफलता
कुत्ता पालना	संकट	दधि दर्शन	सफलता	पितृदर्शन	धनलाभ	रथदर्शन	यात्रा	सर्प का डसना	धनलाभ
कोलाहल दर्शन	राजभय	दर्पण दर्शन	विचलित	पुष्पप्राप्ति	धनलाभ	रसोइघर में प्रवेश	मृत्यु	स्वर्गदर्शन	आयुपूर्ण
खड्ग धारण	उच्चपदप्राप्ति	अनार खाना	रोग	पूर्वदिग्गमन	विजय	राक्षस दर्शन	कष्टनिर्वृत्ति	सर्प खाना	विफलता
खटिया पर सोना	सौभाग्यसूचक	दाहसंस्कार दर्शन	दीर्घायु	फकीर दर्शन	शुभफलदायक	रुद्राक्ष दर्शन	कल्याण	सर्प मारना	शत्रुदमन
गङ्गा स्नान	सन्यास	दुग्ध दोहन	भारोत्थापन	फलप्राप्ति दर्शन	धनलाभ	रोगी दर्शन	दु:खनिवृत्ति	सीताफलदर्शन	सौभाग्यसूचक
हाथी दर्शन	व्यवसायवृद्धि	दुग्धपान	प्रतिष्ठा	बालक का रोना श्रवण	रोग,निराशा	रोटी खाना	रोग	सुवर्ण दर्शन	रोग,धनहानि

।। पुरुष जन्मकुण्डली में द्वादशभावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	अङ्गपीड़ा	धननाश	निरोगी	दु:खी	सुतहानि	शत्रुनाश	स्त्रीदुष्टा	अल्पायु	दुष्टमति	शूर	धनी	दुष्टस्वभाव
चन्द्र	कान्तिसुख	सम्पत्तिवान्	कीर्तिमान्	सुखभोगी	धनी,पुत्रवान्	अल्पायु	सुभार्यावान्	योगी	धर्मात्मा	तेजयुक्त	धनी	कामी
मंगल	रक्तकोप	ऋणी	विक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुनाश	स्त्रीनाश	शरीरपीड़ा	पापरत	तेजस्वी	धनी	पतितदार
बुध	सुखी	धनी,गुणी	अरिमर्दन	सुखी	अल्पपुत्र	रोगी	धर्मज्ञ	गुणी	सुखी	कीर्तिमान	धनी	दरिद्र
गुरु	विद्वान्	धनागम	पापी	सुखी	प्रतापी	कामी	सुभार्या	नीचस्व	धार्मिक	सम्पत्तिवान्	सुलाभ	खल
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	बुद्धिमान्	रोगी	कामी	नीच	तपस्वी	सम्पत्ति	सुमति	रोगी
शनि	दु:खी	धनहानि	पराक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुजित्	स्त्रीकुलटा	नेत्ररोगी	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान्	दु:खी
राहु	रोगी	निर्धन	विक्रमी	मातृहानि	कुमति	सबल	स्त्रीरोगी	रोगी	दैन्ययुक्त	मानी	सुख्यात	पतित
केतु	सकाम	खल	शूर	दु:खी	मूर्ख	सबल	स्त्रीहानि	क्लेशयुक्त	पापी	पितृहीन	धनी	दुर्जन

।। स्त्री जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	क्रोधनी	दरिद्रा	सुसुता	सपीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दु:खार्ता	विधवा	धर्मज्ञा	सुकर्मा	सुलाभा	सरोगा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधना	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रा	सरोगा	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणज्ञा	हीनांगी
मंगल	विधवा	बन्ध्या	विसहजा	सु:खार्ता	विपुत्रा	अरोगा	विधवा	नेत्ररोगणी	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुलाभा	खला
बुध	सौभाग्या	धनाढ्या	पुत्रवती	सुगृहा	धीकान्तियुक्ता	सकोपा	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशाङ्गी
गुरु	सती	धनाढ्या	सुसहजा	सुखिनी	सुगुणा	सापदा	कीर्तियुक्ता	सरोगा	पुत्राढ्या	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	ससुखा	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	सधना	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	बन्ध्या	दु:खिनी	सुदक्षा	हृद्रोगा	विपुत्रा	गुणज्ञा	विधवा	दु:खनी	बन्ध्या	पापिनी	सुलाभा	मूढा
राहु	पुत्रहीना	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्त्ता	विपुत्रा	सधना	दु:खिता	विधवा	बन्ध्या	दुष्कर्मा	नीरोगा	दुष्टा
केतु	दु:खिनी	दु:खार्ता	रोगणी	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुता	विधवा	दु:खिनी	शोकयुक्ता	पापिनी	सुभगा	रोगिणी

।। गोचर में ग्रहों का द्वादशभावस्थ फल ।।

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठ	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय
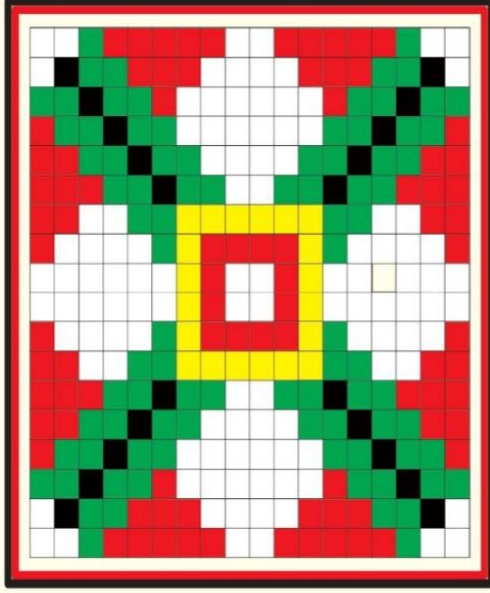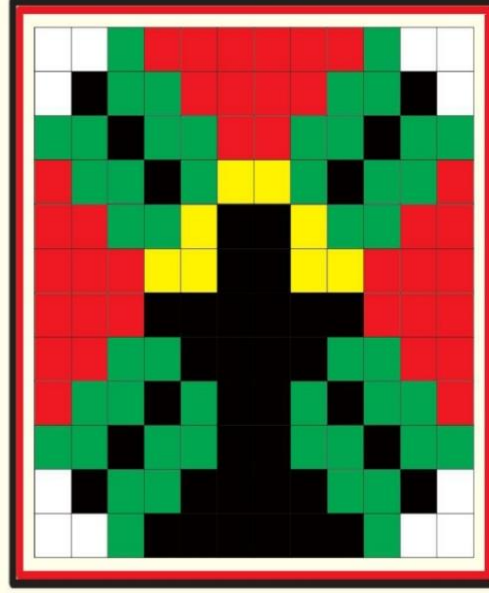
सर्वतोभद्र चक्र | एकलिङ्गतो चक्र | चतुर्लिङ्गतो चक्र | अष्टलिङ्गतो चक्र
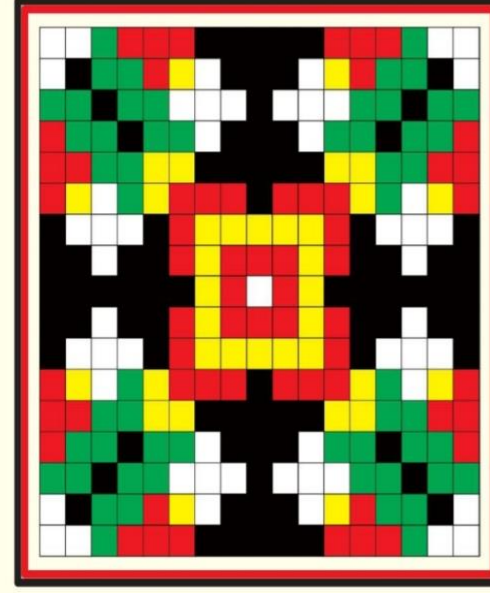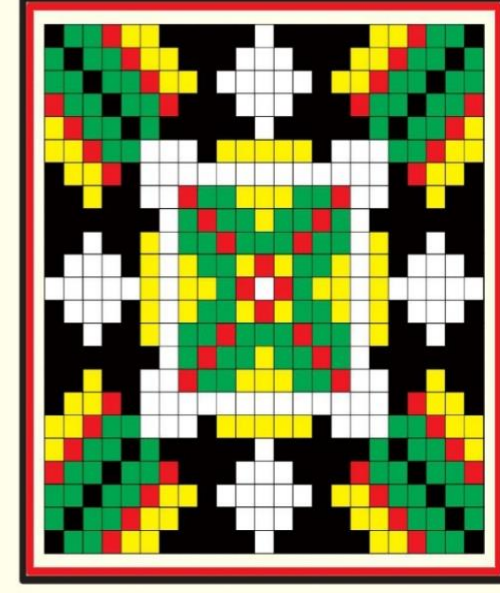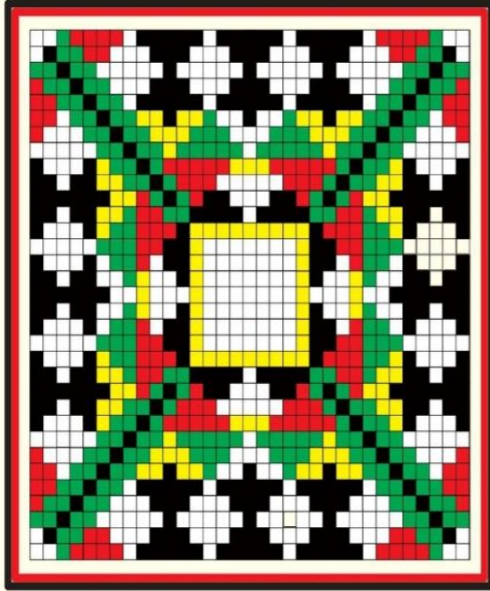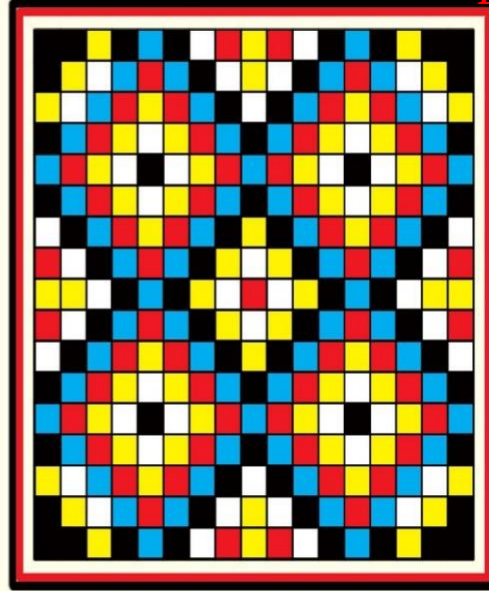
द्वादशलिङ्गतो चक्र | गौरीतिलक मण्डल चक्र | वास्तु मण्डल चक्र | नवग्रह चक्र